एस.सी.ई.आर.टी., बिहार
द्वारा विकसित

S8

दो वर्षीय सेवापूर्व डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-2

(प्राथमिक स्तर)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),
महेन्द्रू, पटना, बिहार

पाठ्य पुस्तक विकास समूह

पत्र S-8

(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–2, प्राथमिक स्तर)

दिशाबोध	श्री दीपक कुमार सिंह, भा.प्र.से., अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना श्री सज्जन राजसेकर, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, बिहार, पटना डॉ० एस.पी.सिन्हा, सलाहकार, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
समन्वयक	डॉ० सुरेन्द्र कुमार, विभाग प्रभारी, एस.सी.ई.आर.टी. पटना
लेखक समूह	श्री जय प्रकाश, व्याख्याता, डायट, सोनपुर
	डॉ० उमारंजन कुमार, व्याख्याता, डायट, बेगूसराय
	डॉ० प्रेम कुमार, व्याख्याता, पी.टी.ई.सी. बंगरा सारण
	डॉ० नूतन कुमारी, व्याख्याता, डायट, दरभंगा
	श्री मनोज कुमार, व्याख्याता, डायट, सीवान
समीक्षक	श्री आनंद कुमार सिंह, व्याख्याता, पी.टी.ई.सी. सासाराम
	श्री उधम सिंह, व्याख्याता, डायट, तरार औरंगाबाद
भाषा समीक्षक	श्री जय प्रकाश, व्याख्याता, डायट, सोनपुर

पाठ–सूची

इकाई	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	लेखन क्षमता का विकास	4–12
2	हिन्दी शिक्षण में सीखने की योजना और कक्षा प्रक्रियाएँ	13–23
3	हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण और वर्तनी	24–39
4	हिन्दी शिक्षण में आकलन	40–55
5	संदर्भ सूची	56

हिंदी का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)

S-8

इकाई–1

लेखन क्षमता का विकास

परिचय

लेखन एक प्रमुख भाषायी कौशल है। लिखने का महत्व सर्वविदित है, लेकिन पाठ्यचर्या में इसको लेकर नवाचार अपनाने की जरूरत है। शिक्षकों का ज़ोर इस पर होता है कि बच्चे सही तरीके से लिखें। शिक्षकों को इस रूप में प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है कि वे लेखन को एक कला की तरह समझें, न कि कार्यालयी कौशल की तरह। आरंभिक वर्षों में लेखन की क्षमता का विकास बोलने, सुनने और पढ़ने की क्षमता की संगति में होना चाहिए। (NCF-2005)

माण्टेसरी के अनुसार बालक को पहले लेखन की शिक्षा दी जानी चाहिए और जब लेखन कार्य करते समय बालक का उसकी शारीरिक क्रियाओं पर नियन्त्रण हो जाएगा तो वह लिखित सामग्री को पढ़ने के लिए सम्भवतः उत्सुक हो उठेगा। लिखना सीखना भाषा सीखने का कठिन लक्ष्य माना जाता है। भाषा का विस्तार लगातार होते रहता है। भाषा की प्रकृति परिवर्तनशील है परंतु लिखित भाषा में परिवर्तन बहुत–ही मंद गति से होता है। लेखन क्षमता के विकास के लिए सुगम प्रणालियों को अपनाने की आवश्यकता है।

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप

- लेखन का अर्थ, संकल्पना एवं विकास की प्रक्रिया से अवगत होंगे।
- पढ़ने एवं लिखने की संबंधों की व्याख्या कर पाएँगे।
- लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया के अंतर को स्पष्ट कर सकेंगे।
- लेखन के विकास में आने वाली समस्याओं से अवगत हो सकेंगे एवं उनके समाधान के तरीकों की व्याख्या कर पाएँगे।
- लेखन के संकेतको का विश्लेषण अपने दैनिक कार्यों में कर सकेंगे।

लेखन का अर्थः संकल्पना और विकास

भाषा के द्वारा भावों, विचारों की अभिव्यक्ति दो प्रकार से होती है – मौखिक (ध्वनि) और लिखित (वर्ण) रूप में। ध्वनियों का लिपि संकेतों में रूपान्तरण लेखन कहलाता है। लेखन मौखिक भाषा को दृश्य चित्रों एवं प्रतीकों में अंकित करने की प्रणाली है। लिपि संकेत भाषा का लिखित रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु वह प्रतिनिधित्व शत–प्रतिशत न होकर आंशिक ही भाषा–शिक्षण का प्रारंभिक कार्य माना है। उनका मत है कि लेखन के साथ–साथ पढ़ना तो आ ही जाता है। पढ़ना और लिखना सीखने के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती है। दोनों क्रियाएं साथ–ही चलती हैं।

शुरूआती लेखनः संकल्पना और विकास

1. **परिचालन कुशलता –** लिखने में अनेक कौशलों में समन्वय की आवश्यकता होती हैं। एक बच्चा लिखना सीख सके, इसके पहले उसके द्वारा उन कौशलों में दक्षता प्राप्त करना आवश्यक है जो इससे सम्बन्धित है। पहले बच्चों में परिचालन क्षमता, ऊँगलियों की पकड़ अच्छी तरह से विकसित होनी चाहिए। वस्तुओं को पकड़ने और उनका प्रयोग करने से बच्चों में पकड़ विकसित होती है। चित्रकारी बच्चों में परिचालन कौशलों का विकास करने के अतिरिक्त उनका मनोरंजन भी करती है। इसलिए बच्चों को चित्र बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। बच्चों की चित्रकारी में आरम्भ में तो अर्थहीन लिखावट जैसे आकार बनते है, जो धीरे–धीरे पहचानने योग्य विशेष आकारों और आकृतियों के रूप में विकसित हो जाते हैं, क्योंकि लिखित भाषा मौखिक भाषा के तत्समय के अनुतान, सुर, आघात, ध्वनि–गुण एवं शैली रूप को यथावत व्यक्त करने में पूर्ण सक्षम नहीं है, किन्तु लेखन भाषा परिसीमित स्थायित्व प्रदान करने का प्रबल साधन है। भावों एवं विचारों की यह कलात्मक अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में होती है, तब उसे लेखन अथवा लिखित रचना कहते हैं। ध्वनि को लिपिबद्ध करना भी 'लेखन' कहा जाता है। इसमें शब्दों की वर्तनी के साथ अक्षरों को सुन्दर एवं स्वच्छ लिखना भी निहित है।
   भाषा में लेखन सिखाने का अर्थ विद्यार्थी को उस भाषा की लेखन–व्यवस्था से परिचित कराना है। इसमें भाषा की लिपि–व्यवस्था तथा उसकी विशिष्टताओं की जानकारी के साथ–साथ उस भाषा का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक है। तभी लिपि–प्रतीकों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति सम्भव है। अतः भाषा की अन्य विशिष्टताओं के साथ लिपि–प्रतीकों की रचना की योग्यता लेखन–कौशल की प्रमुख विशेषता है।

   लेखन को भाषा का गौण कौशल एवं विचारों की आंशिक अभिव्यक्ति माना जाता हैं। लेखन की प्रक्रिया के अन्तर्गत तीन प्रकार के सोपान आते हैंः–

   i. वर्ण लेखन
   ii. वर्तनी ज्ञान
   iii. आत्माभिव्यक्ति लेखन

ये तीनो अंग परस्पर सम्बद्ध है। सामान्यतः लेखन को दुष्कर माना जाता है। प्रमुख शिक्षाविद मॉण्टेसरी ने इसे सरल मानते हुए कहा है कि लिखना सिखाना, फूलों की माला बनाना, मिट्‌टी से विविध प्रकार की आकृतियाँ बनाना, गमले में पानी डालना, के समान छोटी–मोटी शारीरिक क्रियाएँ बच्चों में परिचालन सम्बन्धी कुशलताओं के विकास में सहायक है।

2. **अक्षरों, शब्दों और वाक्यों का अभ्यास –** बच्चों को लिखना सिखाने में दो बातें बहुत महत्व रखती है – उनकी योग्यता एवं क्षमताओं का सम्मान करना और ऐसा आनन्ददायक वातावरण तैयार करना जिसमें वे सीख सकें। इस बात को हमें समझने की आवश्यकता है कि बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। बच्चे अपने परिवेश एवं सामाजिक अनुभवों से अपनी मातृभाषा सीख लेते हैं। इसी तरह लिखित सामग्री से जुड़े अर्थपूर्ण अनुभवों के माध्यम से लेखन कौशल को भी धीरे–धीरे ग्रहण कर लेते हैं।

   सामान्यतः यह माना जाता है कि अक्षरों का लगातार अभ्यास करने से वाक्यों को लिखने में सहायता मिलती हैं। यह बात पूर्णतः सही नहीं है। यदि बच्चे अक्षरों को दोहराने के कठिन कार्य में लगे रहे तो लिखना सीखने आरम्भ करने से पहले ही लिखने के प्रति उनकी रूचि खत्म हो जाएगी। यद्यपि बच्चों को लिखित शब्दों से परिचित कराने में अलग–अलग अक्षर और वर्णमाला उपयोगी हैं किंतु वे तबतक अर्थपूर्ण नहीं हो सकते जबतक शब्दों और वाक्यों के साथ उनके सम्बन्धों को स्पष्ट नहीं कर दिया जाए।

   बच्चों के क्षमताओं की सम्मान करने की आवश्यकता है। विद्यालय में प्रवेश से पूर्व बच्चों में एक विशेष लेखन की क्षमता भी होती है। यह एक समान्य बात है कि बच्चे मिट्‌टी, फर्श या कागज पर अलग–अलग चित्र एवं आकृतियाँ बनाकर अच्छी खासी कहानी सुना देते हैं। ये विविध प्रकार की आकृतियाँ उनके लिए निरर्थक नहीं होती हैं, बल्कि अपनी बातचीत को लिखकर कहने की एक विशेष लिपि होती है। बच्चों को सर्वांगीण विकास का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। सीखने की प्रक्रिया चित्र को पूरा करने के लिए टुकड़ों को एकसाथ जोड़ने जैसा कार्य नहीं है, बल्कि वास्तव में तो यह इससे विपरित प्रक्रिया है। सर्वप्रथम एक सम्पूर्ण चित्र आकार लेता है और फिर विशिष्ट चीजें अलग–अलग तरीके से स्पष्ट होती चली जाती हैं। जबतक एक सार्थक सम्पूर्ण उपलब्ध नहीं कराया जाता, छोटी विशिष्टताएँ उदाहरणार्थ एक वर्णमाला के अलग–अलग अक्षर, कोई अर्थ नहीं रखते तथा यह अरूचिकार भी प्रतीत होता है। इस तरह का प्रयास लिखने की समूची प्रक्रिया के प्रति अरूचि को बढ़ावा देगा। यह एक गंभीर समस्या है। क्या भाषा विकास हेतु वर्णों एवं शब्दों का निरंतर अभ्यास की जानी चाहिए? भाषा के संदर्भ में विचारणीय प्रश्न है।

3. **लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया –** भाषा के विभिन्न अंगो (पठन, वाचन, श्रवण, लेखन) में लेखन का कार्य अपेक्षाकृत जटिल है क्योंकि लेखन के कार्य में माँसपेशियों में संतुलन की आवश्यकता पढ़ती है। जिस बालक ने सिर्फ पढ़ना ही सीख है, उसमें अभी इस संतुलन का अभाव होता है। लेखन कौशल का विकास एक चरणबद्ध प्रक्रिया के अन्तर्गत होता है।

आड़ी तिरछी रेखाएं–

लेखन के प्रारंभिक चरण में यह आवश्यक है कि बालक अक्षरों की आकृति का भली प्रकार से निरीक्षण करें और फिर वैसे ही अक्षर सीखने का अभ्यास करें। बालकों को विद्यालयों में जो भिन्न–भिन्न प्रकार की क्रियाएँ होती हैं उनमें उद्देश्य होता है कि बालकों के भिन्न–भिन्न अंगो की माँसपेशियों में सन्तुलन स्थापित किया जाए।

माँसपेशियों में संतुलन स्थापित होने के पश्चात् ही बालकों को लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसके अनुसार प्रत्येक बालक अपने विचार के आधार पर ही लिखना प्रारम्भ करेगा, न कि आयु के आधार पर। प्रायः यह देखा जाता है कि यदि किसी शिशु के हाथ में चॉक या पेन्सिल इत्यादि दिया जाए तो वह दीवार पर या फर्श पर आड़ी–तिरछी रेखाएँ खींचकर लिखने का प्रयास करता है। छोटे बालक की इस प्रवृत्ति का लाभ लिखना सीखाने में किया जा सकता है। हम लिखना सिखाने से पहले, बालकों को इसी प्रकार की रेखाएँ खिंचवाएँगे।

पहले–पहले बालकों से सीधी रेखाएँ ही खिंचवाई जाएँगी। इसके बाद तिरछी रेखाओं का अभ्यास किया जा सकता हैं, उदाहरणार्थ। तत्पश्चात् बच्चों को वृत्त, अर्धवृत्त आदि विभिन्न सरल प्रतीकों का अभ्यास कराया जाना चाहिए। जैसे–जैसे बालकों को इन चिन्हों का अभ्यास होता जाएगा, वैसे–वैसे वे अक्षर बना सकने में समर्थ हो सकेगें। जैसेः– अ, आ, क, ख इत्यादि

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन आड़ी–तिरछी रेखाओं के आधार पर बालकों को लिखना सिखाया जा सकता है। बालक तीन वर्ष की अवस्था से ही टेढ़ी रेखाएँ खींचना प्रारम्भ कर सकते हैं। बच्चों के लिए इन रेखाओ एवं प्रतीकों के पीछे एक अर्थ छिपा हुआ रहता है। बच्चों के लिए इन रेखाओं का अर्थ होता है जिससे वे अपने मन की बातों को अभिव्यक्त करते हैं।

प्रतीकात्मक चित्रः– आड़ी–तिरछी रेखाओं की मदद से निर्मित चित्रों के द्वारा बच्चे अपने मन के भावों को व्यक्त कर देते हैं। बच्चे इन आकृतियों में स्वयं के द्वारा पढें अथवा देखी गयी वस्तु को चित्र रूप में प्रदर्शित करते है। उदाहरण स्वरूप अर्जुन द्वारा बनाया प्रतीकात्मक चित्र देखिए

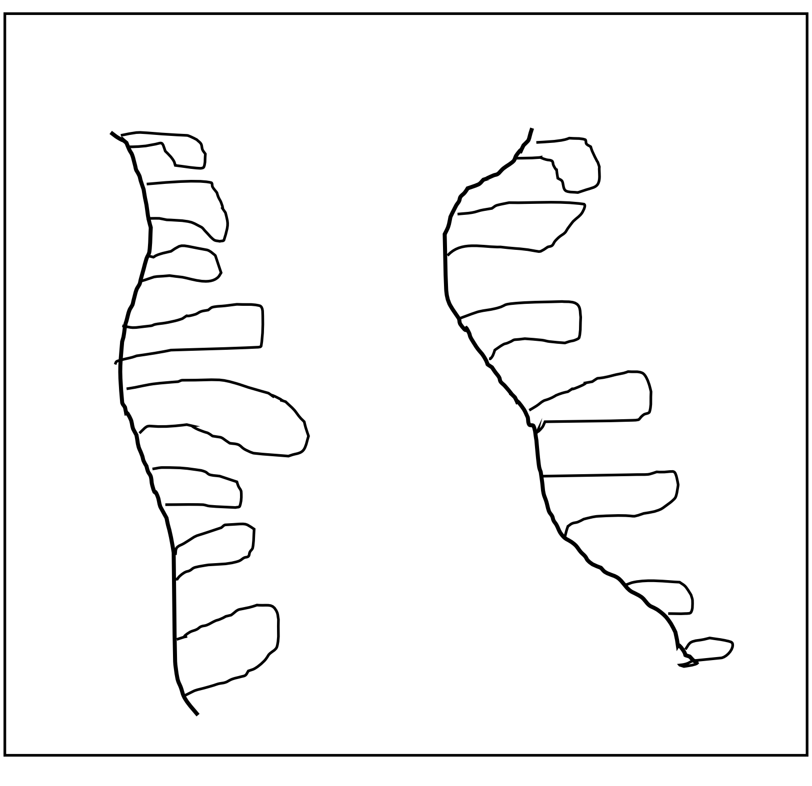

प्रारम्भिक समय में बच्चों की ये तिकोनी रेखाएँ अभिव्यक्ति का एक माध्यम होती है। इन लकीरों में बातें है, अर्थ है, भाव है, और पारम्परिक लेखन की ओर बढ़ने की क्षमता और विश्वास है। बच्चों की इन पहली लकीरों को कक्षा में बिना रोक–टोक स्वीकारना और उस पर बात करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये लकीरें बच्चों के लेखन के विकास का प्रारंभिक महत्वपूर्ण स्थल है जहाँ बच्चा पढ़ने–लिखने को सार्थकता से देख रहा है।

वह यह समझ रहा है कि मन की बातों को लिखा जा सकता है और लिखि गई बात को पढ़ा जा सकता है।

अर्जुन उपरोक्त चित्र में आसमान में दिख रहे बादल को उत्तर पुस्तिका में लेखन सामग्री द्वारा अंकित किया है। वह यथासंभव अपनी भावनाओं को व्यक्त करता हैं। हम शिक्षकों की पहली दृष्टि में यह व्यर्थ लेखन है। लेकिन हम सूक्ष्मावलोकन करते है तो पाते है कि अर्जुन अपनी बातों को व्यक्त करने में सफल रहा है। यहाँ आवश्यकता है, उसकी भावनाओं को समझ कर प्रोत्साहित कर माहौल बनाने की। वह अतिशीघ्र अक्षरों को भी लिखना प्रारंभ कर देगा।

मननः आपकी दृष्टि में अर्जुन का यह शुरूआती चित्र बादल को व्यक्त करता है या नहीं?

हम आगे लिखे चित्र से इसे और अच्छी तरह समझ सकते है।

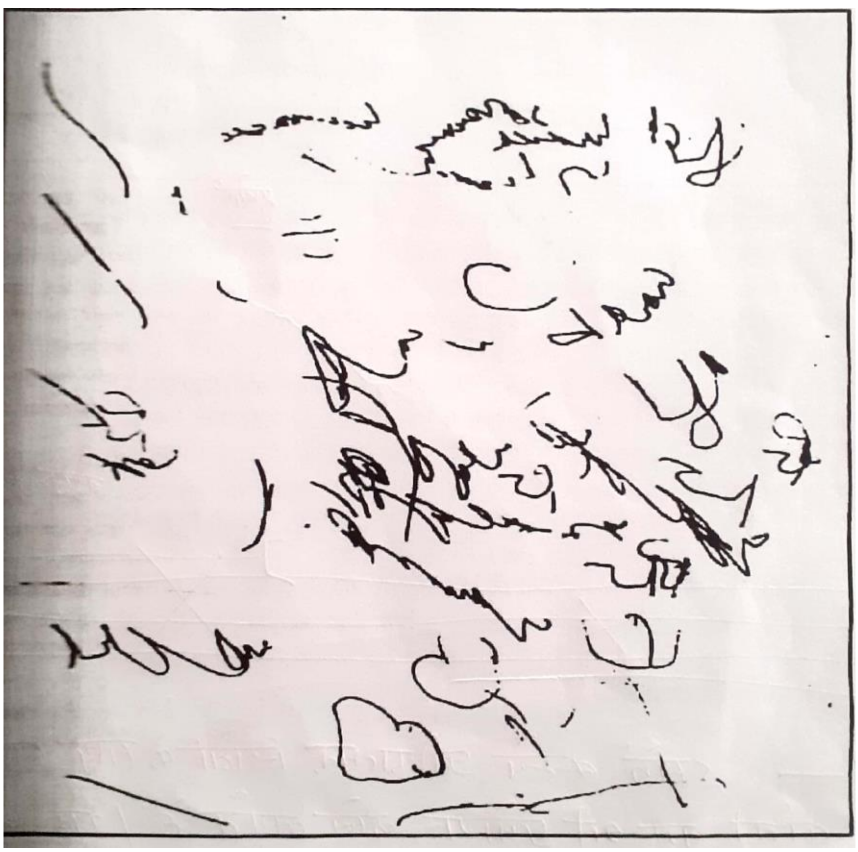

यह चित्र प्रिया का है वह आड़ी, तिरछी, रेखाएं खींच रहीं है। उसे प्रोत्साहन मिला, परिवेश मिला, उसने धीरे–धीरे आड़ी, तिरछी लकीरों के साथ–साथ वर्णों को लिखना प्रारम्भ कर दी।

प्रिया ने लिखने के बाद बताया नहीं कि क्या लिखा? बस इतना कहा '' मैं लिख रही हूँ।'' प्रिया द्वारा अक्षरों की आकृति बनाना इस बात की ओर संकेत करता है कि उसकी यह समझ बनी है कि लिखना अपनी बात को कहने का एक सार्थक माध्यम है।

स्व–वर्तनी – इसमें बच्चे प्रतीकात्मक चित्रों के साथ स्वयं की वर्तनी का भी प्रयोग करने लगते है। यह भाषा की मानक एवं शुद्ध वर्तनी न होकर बच्चों द्वारा निर्मित होती है। उदाहरण स्वरूप यह चित्र देखिए–

चित्र 9

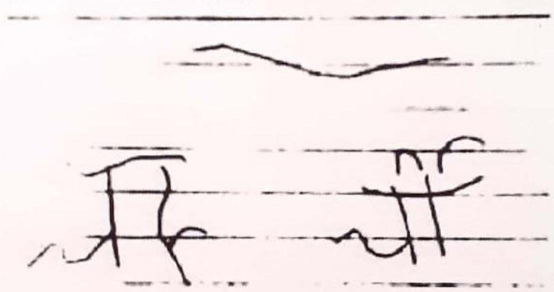

तनिष्ठा

यह चित्र तनिष्ठाा का हैं। छिपकली चींटी को खा गई उसने दो शब्दों में लिखने का प्रयास किया है। तनिष्ठा का लेखन यह बताता है कि उसकी ध्वनि संकेत की समझ बन रहीं है। उसने ध्वनि को ध्यान से सोच कर लिखने का प्रयत्न किया है। छिपकली के लिए चह और चींटी के लिए चीं लिखा।

लेखन की इस प्रक्रिया में बच्चों का आगे बढ़ना इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों को ऐसा माहौल कितना मिल रहा है जो सार्थक प्रिंट से समृद्ध है। यहाँ प्रिंट से आशय सिर्फ दिवारों पर कहानियाँ, किताबों के चार्ट बनाकर चिपका देने से नहीं है। 'प्रिंट' की सार्थकता के मायने तब सिद्ध होते है जब उस प्रिंट(जैसे कहानी, कविता आदि की किताबें चार्ट, कक्षा में पढ़ने–लिखने से जुड़ी अन्य सामग्री) का बच्चों की रूचि एवं आवश्यकता के अनुसार भरपूर इस्तेमाल किया जा रहा हो।''(साभार–लिखने की शुरूआत एक संवाद पृष्ठ 08)

जहाँ बच्चों के प्रारम्भिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन एवं सम्मान मिलता है, वहाँ बच्चा लेखन कौशल के अन्याय बिन्दुओं को पार करते हुए अच्छा लेखन कौशल प्राप्त करता है।

परम्परागत लेखन :– लेखन के उपरोक्त चरणों से लगता है जैसे – घर को घर, चींटी को चींटी आदि। अब बालक वर्णों एवं शब्दों की शुद्धता उनके आकार एवं बनावट आदि को पहचानने लगते हैं।

पढ़ना और लिखना में संबंध – पढ़ना, भाषाई शिक्षण कौशल का आधारभूत और आवश्यक अंग है। इसका अर्थ मात्र वाचन करने तक सीमित न होकर मुख्य रूप से समझकर अर्थ ग्रहण करने से है। लेखन में भावों , विचारों , अनुभवों सम्प्रत्ययों आदि को सार्थक विशिष्ट ध्वनियों के प्रतीक चिह्नों का प्रयोग अभिव्यक्ति के साधन रूप में होता है।

भाषा शिक्षण में आधारभूत चारों कौशलों सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना का आपस में अंतः संबंध है। एक कौशल का विकास दूसरे कौशल के विकास को प्रभावित करता है। प्रभाव के इस क्रम में पढ़ना और लिखना भी अछूता नहीं है। दोनों घटना एक साथ घटित होने वाली प्रक्रिया है। जब हम लिखते है। तब पढ़ते हैं और पढ़ते समय लिखित विषय वस्तु का होना एक अनिवार्य एवं आवश्यक शर्त है।

प्राथमिक कक्षाओं में लेखन कौशल के विकास के तरीके–

चित्र बनाकर, रेखाचित्र से कहानी बनाकर, अपनी रूचि की चीजें के बारे में लिखना, कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना, श्रुतलेख लयात्मक शब्द से तुक बन्दी। :– प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में बच्चों के लेखन कौशल को स्वभाविक रूप से विकसित कर सकते है। विकसित करने में सबसे ज्यादा जोर इस बात पर दिया जाता है कि बच्चे किस प्रकार वर्णमाला को सीख जायें। प्रायः अध्यापकों की यह सोच होती है कि बिना वर्णमाला ज्ञान के लिखने प्रक्रिया शुरू नहीं हो सकती। किन्तु यदि इस पर सूक्ष्मतया विश्लेषण किया जाये तो कहा जा सकता है कि हम वर्णमाला पर आवश्यकता से अधिक बल देते है। शरूआत से ही हमें यह ध्यान देने की जरूरत है कि हम बच्चों को लेखन के किस तरह के मौके प्रदान कर रहें हैं तथा उपयुक्त तरीके से आकलन करने से पूर्व या तो अत्यन्त जरूरी है कि हम बच्चों को अपने मन की बात लिखकर अभिव्यक्त करने का मौका दें। तभी लेखन कार्य से बच्चे जुड़ पाएँगे और उनके लेखन कार्य में विविधता भी होगी।

साभार–लेखन की शुरूआत एक आकलन पृ0 43

प्राथमिक कक्षाओं में लेखन के विकास के विविध–तरीके हो सकते हैं।

चित्र बनाना – बच्चे चित्रों के माध्यम से स्वयं अपनी बात कहकर आनन्दित होते हैं। उन्हें अपनी बात बोलने के अलावा एक और ढ़ंग से कहने का अवसर मिलता है। परंतु शिक्षक/अभिभावक बच्चों के चित्र–लेखन पर ज्यादा गौर नहीं करते या फिर यह समझ नहीं पाते कि यह शुरूआती लेखने से जुड़ा एक चरण है। अतः शुरूआती दौर का चित्र लेखन, पढ़ना–लिखना सीखने का अहम हिस्सा होता है। शिक्षक और अभिभावकों को इसे समझना चाहिये और इसका आकलन भी करना चाहिए।

साभार–लिखने की शुरूआत एक संवाद पृ0 16

मननः आपकी दृष्टि में चित्र बनाना पढ़ने–लिखने का हिस्सा है कि नहीं?

रेखाचित्र से कहानी बनाकर लिखनाः–

हम रेखा चित्र से कहानी बनाकर भी बच्चों के लेखन कौशलों की वृद्धि कर सकते है। पाठ्य–पुस्तकों, अखबारों इत्यादि में छपे हुए रेखा चित्रों को रंगभरवा कर बच्चों से छोटी–छोटी कहानी बनवाकर भी उसे प्रोत्साहित कर सकते हैं। बच्चों की रूचि कि अनुसार अखबार या पत्रिका में से कुछ चित्र काटकर कक्षा में प्रदर्शित किए जा सकते हैं और इन पर चर्चा की जा सकती है।चित्र आकर्पक हों, चित्रों में बातचीत करने की भरपूर संभावनाएँ हो। चित्रों को चुनते समय इन बिन्दुओं पर ध्यान देना जरूरी है।

रोचकता

स्पष्टता

बच्चों के परिवेश से जुड़ाव

किसी भी तरह की हिंसा से मुक्त

बच्चों के साथ बैठकर चित्र पर चर्चा करें और बच्चों के विवरण को बोर्ड / चार्ट पर लिखें एवं बच्चों के साथ मिलकर पढ़े। स्थानीय / क्षेत्रीय त्योहारों से जुड़े चित्र, स्थानीय घटना आदि से जुड़े चित्र, स्थानीय पशु–पक्षियों से जुड़े चित्र, लेखन के विपय हो सकता हैं।

(साभार–लेखन की शुरूआतः एक संवाद पृ0–68)

कक्षा–1 के अंकुर की पाठ 13 में लालची कुत्ता का विविध चित्र देखें।

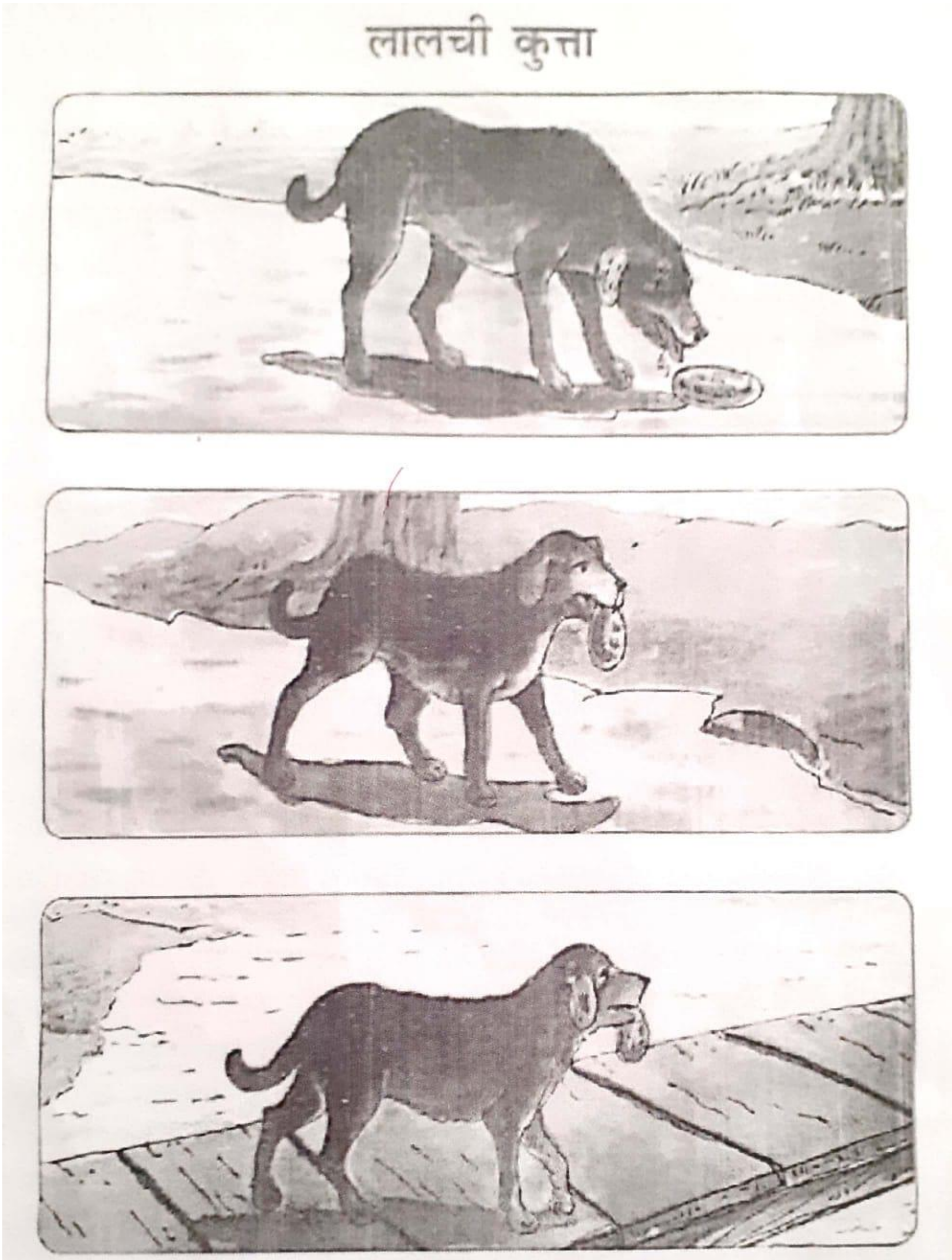

शिक्षक / शिक्षिका इस प्रकार की क्रियाओं के द्वारा छात्रों के लेखन कौशल का विकास कर सकते हैं

इसप्रकार की गतिविधि द्वारा बच्चा अन्याय चित्र पर भी अपनी भावनाओं को लेखन कौशल द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

अपनी रूचि की चीजों के बारे में लिखना—

अच्छा लेखन वह माना जाता है जिसमें लेखक का अपना दृष्टिकोण और लिखी गई बात से उसका जुड़ाव होता है। बच्चों को भी अपने दृष्टिकोण का विकास करने के मौके लेखन सम्बंन्धित गतिविधियों द्वारा दिये जाने चाहिए। बच्चों से लेखन के पूर्व चर्चा करना उन्हें नए—नए विचारों तथा पहलूओं का लेखन में समावेश करने की प्रेरणा देता है। इसलिए किसी भी लेखन के पूर्व बच्चों से चर्चा कर लें कि वे उसमें कौन—कौन सी बातें सम्मिलित करने की सोच रहे हैं। यदि बच्चे किसी विषय पर नहीं लिखना चाहते और चर्चा के बाद भी वे सक्षम महसूस नहीं कर पा रहे तो उन्हें इतनी छूट जरूर मिलनी चाहिए कि वे विषय बदल लें। विशेष रूप से प्रारम्भिक कक्षा के बच्चों के लेखन के अवसर उनकी जिन्दगी से जुड़े अनुभवों, जो कि उनके बहुत करीब हों, से सम्बन्धित होने चाहिए। इससे बच्चों को यह स्पष्ट रहता है कि क्या—क्या लिखना है और कैसे लिखना है और उन्हें अपनी बात खुलकर कह देने से अपने दृष्टिकोण का निर्माण होता है। साथ ही उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

साभार—लिखने की शुरूआत एक संवाद—पृ0 46

कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना—

हम कहानी को आगे बढ़ाकर भी प्रारम्भिक कक्षा के छात्रों का लेखन बढ़ा सकते हैं। कहानी के मूल संदर्भ में परिवर्तन करके कि— यदि ऐसा होता तो क्या होता? तब निश्चय ही बच्चा अपनी कोमल—कल्पनाओं से विविध सन्दर्भों को सन्निहित करता है। धीरे—धीरे उसकी रूचि कथा लेखन के प्रति बढ़ती जाती हैं। बच्चों के साथ मिलकर आस—पास रहने वाले पालतू जानवरों के घरों के बारे में चर्चा करे और बच्चों को सोचने का मौका दें। अगर जानवरों के घर बदल दिए जाएँ तो क्या होगा? जैसे— कबूतर कौवे के घोसलें में रहने लगे तो? चिड़िया चूहे बिल में चली जाए तो? चींटी के घर में केंचुआ रह पाएगा? अगर गाय हमारी कक्षा में आ जाए तो? क्या होगा? इन गतिविधियों से निश्चय ही बच्चों में लेखन के प्रति अभिरूचि बढ़ती जायेगी।

साभार— लिखने की शुरूआत एक संवाद पृ0 58

श्रुतलेख— श्रुतलेख का तात्पर्य सुनकर लिखना से है। इस प्रक्रिया में शिक्षक/शिक्षिका गद्यांश वा पद्यांश के कुछ भागों को बोलते हैं और छात्र उसे लिखते हैं। श्रुतलेख में सुन्दर लिखावट का सर्वाधिक महत्व नहीं होता है। इसमें महत्व भापा की शुद्धता का हो जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों की श्रवणेन्द्रियाँ प्रशिक्षित करना है, ताकि वह भाषा के शुद्ध रूप को सावधानी से सुन सके। इसके द्वारा बच्चे के हाथ, कान, मस्तिष्क की क्रियाओं में सन्तुलन स्थापित किया जाता है, उसकी स्मरण शक्ति का विकास किया जाता है। श्रुतलेख की शिक्षा के लिए अध्यापक को गद्यांश या पद्यांश चुनते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वह न तो बहुत अधिक कठिन हो और न ही बहुत अधिक सरल। कुछ लोगों के मतानुसार श्रुतलेख वर्तनी— शिक्षण के लिए भी आवश्यक है। श्रुतलेख वर्तनी शिक्षण के लिए इतना आवश्यक नहीं है, जितना कि सुनकर समझने और एक निश्चित गति में लिखने के अभ्यास के लिए आवश्यक है। श्रुतलेख से वर्तनी का परीक्षण हो सकता है शिक्षण नहीं।

इकाई–2
हिन्दी शिक्षण में सीखने की योजना और कक्षा प्रक्रियाएँ

परिचय योजना किसी भी कार्य की सफलता की कुंजी है। योजनाबद्ध तरीके से किया गया कार्य विद्यार्थियों को सीखने–सिखाने, तथा शिक्षण–प्रक्रिया की अवधारणओं को, विकसित करने में सहायता प्रदान करती है। योजना न केवल विद्यार्थियों का सीखना सुनिश्चित करती है बल्कि विषय भटकाव को भी रोकती है। अतः शिक्षण की योजना बनाते समय प्रत्येक विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को ध्यान में रखना आवश्यक है, ताकि उनकी आवश्यकताओं एवं समस्याओं को ध्यान में रखकर संभावित समाधान को योजना में शामिल किया जा सके।

विद्यालय वह संसाधन है, जहाँ व्यवस्थित पाठ्यक्रम के द्वारा सभी बच्चे एकसाथ सीखते हैं। अतः यह स्पष्ट होना आवश्यक हो जाता है कि उन्हें क्या सीखना चाहिए और इसके सबसे अच्छे तरीके कौन–से हो सकते हैं, जो उन्हें सीखने में मदद के साथ उनका आकलन भी कर सकें? जो बच्चे विद्यालय आते हैं, वे भाषाई स्तर पर पहले से ही अपने आसपास के परिवेश तथा परिवार के माध्यम से बहुत कुछ सीख चुके होते हैं। ऐसे में यह आवश्यक होगा कि हम कुछ प्रक्रियाओं का निर्माण करें और बताएँ कि हम किस तरह की गतिविधियों को कक्षा में करवाए जाने के लायक मानते हैं। अतः योजना हमें कक्षा शिक्षण को बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ने तथा उनके द्वारा क्या सीखा गया यह समझने में मदद करती है।

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न तथ्यों से आवगत हो सकेंगेः–

- पाठ योजना के परम्परागत दृष्टिकोण को जान सकेंगे।
- शिक्षण योजना बनाने की जरूरत को समझ सकेंगे।
- शिक्षण योजना क्या है? क्यों हम शिक्षण योजना की बात कर रहे हैं, केवल पाठ योजना की नहीं? इस बात को समझ सकेंगे।
- शिक्षण योजना के क्रियान्वयन का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाल सकेंगे।
- आवश्यकतानुसार योजना में लचीलापन और एकधिक संभावना की जरूरत का समझ सकेंगे।
- प्रभावी कक्षा शिक्षण योजना बना सकेंगे।
- प्रशिक्षु सीखने की योजना का अर्थ तथा सीखने की योजना के प्रमुख बिन्दुओं से अवगत हो सकेंगे।
- रचनात्मक शिक्षण उपागम तथा कक्षा प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- शिक्षण हेतु सीखने की योजना की चुनौतियों को जान सकेंगे।

हिन्दी सीखने का अर्थ और इसके लिए सीखने की योजना के प्रमुख बिन्दु

यह जानना आवश्यक है कि कक्षा का औपचारिक शैक्षणिक वातावरण भाषा सीखने के अनौपचारिक वातावरण से बहुत अलग होता है। यही कारण है कि सीखने–सिखाने के उद्देश्य भी अलग होते हैं। इसलिए विषय की पकड़ व बच्चों के प्रति संवेदनशीलता के साथ–साथ सीखने–सिखाने की एक योजना बनाना आवश्यक है।

हम जानते हैं कि बच्चे ऐसी गतिविधियों से जुड़े रहते हैं, जो उसके प्राकृतिक वातावरण में अन्तर्निहित होती है। बच्चों के आसपास जो प्रक्रियाएँ होती रहती हैं, वे उसे ज्ञान व समझ पैदा करने और अपने पर्यावरण से सीखने में सहायक होती हैं।

बच्चे विद्यालय के अपेक्षा घरेलू वातावरण में अधिक समय व्यतीत करते हैं। अतः सीखने का ज्यादा मौका उन्हें घर में मिलता है। घर में बच्चों में विभिन्न अनुभवों तथा अवसर के साथ–साथ अभिव्यक्ति की पर्याप्त आजादी के लिए पर्याप्त समय मिलता है। अतः एक ऐसी व्यवस्थित एवं नियोजित योजना की आवश्यकता है, जो विविध क्षमताओं एवं अनुभवों के साथ आने वाले विभिन्न पृष्ठभूमि वाले सभी बच्चों की जरूरतों को पूरी कर सकें। इसके साथ ही योजना इसलिए भी जरूरी है ताकि विद्यालय को व्यवस्थित क्रमबद्ध सीखने के स्थान के रूप में विकसित किया जा सके। आवश्यकतानुसार योजना में लचीलेपन का होना जरूरी है, ताकि शिक्षक या शिक्षिका का विषय से संबंधित जरूरी तैयारी कर सकें।

सीखने की योजना के प्रमुख बिन्दु

1. यह सुनिश्चित करना कि पाठ में हम क्या पढ़ाएँगे।
2. हमे किसे पढ़ाना है?
3. हम कैसे पढ़ाएँगे?
4. वह कौन–सी जानकारी की आवश्यकता होगी जो हमे पढ़ाने में मदद करेगी।
5. हमें यह कैसे जानकारी मिलेगी कि जो हमारे द्वारा पढ़ाया गया है उसे बच्चे समझ गए?
6. योजनानुसार परिणाम नहीं मिलेगा तो हम कैसे तैयारी करेंगे?

पाठ में क्या पढ़ाना या सिखाना है?

बच्चे को पाठ में क्या पढ़ाना या सिखाना है, यह शिक्षण के लिए एक महत्त्वपूर्ण सवाल है। बच्चे की समझ व स्तर को ध्यान में रखकर एवं पाठ्यचर्चा को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया जाता है। पाठ्यपुस्तक को बनाते समय पाठ का चयन बच्चे के सीखने के स्तर और सरल से कठिन क्रम को ध्यान में रखकर किया जाता हैं। अतः शिक्षण के रूप में हम यह तय कर सकते हैं कि कौन–सा पाठ पढ़ाना है। पाठ योजना बनाते समय हमें सजग होना चाहिये कि हम क्या पढ़ाने जा रहे हैं। इसके लिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि बच्चे पहले से क्या सीख चुके हैं ताकि उनके पूर्व ज्ञान व समझ के आधार पर अन्तःक्रिया कर बातचीत के द्वारा उनके ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सके।

किसे पढ़ाना है?

एक शिक्षक के लिए पाठ योजना बनाने से पूर्व यह जानना जरूरी हो जाता है कि कक्षा में बच्चे की समस्या क्या है? उनकी उम्र क्या है? तथा वह किस परिवेश से आते हैं? इसके साथ यह जानना भी जरूरी हो जाता है कि विषय–वस्तु के बारे में बच्चा कितना जानता है? बच्चे के विषय ज्ञान को उसकी सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर भाषा की ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों के संकोच को कम कर सके, साथ–ही कक्षायी गतिविधियों में उनकी भागीदारी का अवसर प्रदान कर सके।

हम कैसे पढ़ाएँगे?

किसी भी योजना बनाने के क्रम में यह तय करना आवश्यक है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया क्या होगी? कक्षा में विद्यार्थियों के स्तर को ध्यान में रखकर हम योजना का निर्माण करते हैं। साथ–ही शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे किस प्रकार की गतिविधियों में ज्यादा भागीदार बनेंगे। शिक्षक कौन–सी शिक्षण का प्रयोग करेंगे जो बच्चों के अधिगम में सहायक होगा। इसके अन्तर्गत पाठ्यपुस्तक, कार्यपुस्तिका या वर्कशीट (जिसका हम प्रयोग करना चाहते हैं) चार्ट, चित्र कार्ड इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है। इसके अलावा प्रसंगानुकूल क्रियाकलाप के माध्यम से विद्यार्थियों में सीखने–सिखाने की क्रिया को प्रभावकारी बनाया जा सकता है।

शिक्षण द्वारा पढ़ाए गए विषय व उसकी जाँच करना।

कक्षा–कक्ष में बच्चों की सहभागिता कैसी है? अपने सीखने को लेकर वह कितना सकरात्मक है? या फिर जो पढ़ाया गया है, वह कितना समझ पाया है? विद्यार्थियों को ध्यान रखते हुए उन्हें निरंतर प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है। अतः बच्चों के सीखने की सीमा और शर्त का आकलन करने हुए कक्षा को व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। इसलिए कक्षा में क्या हुआ या फिर आगे क्या करना है, इसका जायजा लेते हुए अपना अगला कदम बढ़ाना चाहिए। यही कारण है कि बनाई गई योजना में आवयकतानुसार काफी लचीलेपन की जरूरत होती है। हमें अपनी कक्षा में योजना के अलावा वैकल्पिक विचार भी तैयार रखना चाहिए।

हिन्दी शिक्षण के लिए सीखने की योजना के प्रमुख प्रकार

हिन्दी भाषा शिक्षण विशिष्ट है, क्योंकि यह किसी के लिए मातृभाषा तो किसी के लिए द्वितीय भाषा के रूप में है। भाषा–शिक्षण के प्रमुख तत्व शिक्षक, शिक्षार्थी एवं शिक्षण सामग्री है। भाषा शिक्षण में शिक्षक मात्र सुगमकर्त्ता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। वे शिक्षार्थी के लिए उचित शिक्षण–सामग्री उपलब्ध कराने का काम करते हैं, जो बच्चे की उम्र एवं बाल–मनोविज्ञान के अनुरूप हो। बच्चे का सामाजिक वातावरण यथा परिवार का परिवेश, बच्चे की हमजोली सांस्कृतिक क्रियाकलाप (नाटक, संगीत, वैवाहिक कार्यक्रम इत्यादि) के साथ–ही नगरीय ग्रामीण परिवेश, रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल जैसी आधुनिक तकनीकी भी भाषा शिक्षण को व्यापक रूप से प्रभावित करती है।

हिन्दी भाषा–शिक्षण के लिए कई सिद्धान्तों एवं तकनीकों का प्रयोग सीखने की योजना में करने के कारण कई योजनाओं का विकास किया गया है जो कक्षा में संचालित की जाती हैं, जो निम्नवत हैः–

i. खेल–खेल में शिक्षा
ii. प्रत्यक्ष विधि
iii. संरचनात्मक योजना
iv. कहानी शिक्षण योजना
v. पाठ योजना
vi. रचनात्मक शिक्षण योजना
vii. समग्र भाषा शिक्षण योजना
Viii. प्रश्नोत्तर योजना
iX. चित्र रचना योजना

i. खेल–खेल में शिक्षण योजना – यह शिक्षण योजना प्रारंभिक कक्षा के बालकों के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि खेल में उनकी स्वाभाविक रूचि होती है। इसके द्वारा बच्चों को कहानी बनाने की प्रेरणा दी जाती है। इसमें बच्चों को समूह में बाँटकर वर्ण से शब्द और शब्द से वाक्य की रचना करायी जाती है।

ii. प्रत्यक्ष विधि – भारत में इस विधि की शुरूआत अंग्रेजी भाषा के शिक्षण के बाद होती है। प्रायः द्वितीय भाषा के लिए महत्त्वपूर्ण है। भारत में भी हिन्दी कुछ भागों में द्वितीय भाषा के रूप में प्रयोग में लायी जाती है। बिहार के ही कुछ भागों, जैसे – सीमांचल में मैथिली भाषा, पश्चिमी भाग में भोजपुरी भाषा बोली जाती है। यहाँ के बच्चों के लिए हिन्दी नवीन भाषा है। अतः उनके शिक्षण के लिए प्रत्यक्ष योजना आवश्यक है। जिस प्रकार मातृभाषा में बालक को शिक्षा देते समय उनका परिचय प्रत्यक्ष वस्तुओं से कराया जाता है और बालक उनसे संबंधित वाक्य बोलता है, वैसे ही नवीन भाषा के सीखाने में समानार्थी शब्द को बताकर पुनरावृत्ति द्वारा हिन्दी भाषा को सिखाया जा सकता है।

iii. संरचनात्मक योजना – अंग्रेजी भाषा में संरचनात्मक योजना का प्रयोग पहले हुआ। भारत में उसी के अनुरूप हिन्दी भाषा–शिक्षण में इसका प्रयोग किया जाता है। इसमें मौखिक कार्य पर बल दिया जाता है। इसमें कोशिश की जाती है कि शब्दों की सार्थक व्यवस्था अर्थानुसार हो। शिक्षक कक्षा के शुरू में वाक्य के सरल रूप को ही बताता है और उसे दुहराता है इसके निम्न प्रारूप क्रमशः हो सकते हैं:–

- सरल दो खण्ड प्रारूप – मैं चला। सीता आयी। आदि
- सरल तीन खण्ड प्रारूप – वह जा रहा। वह सो रहा। आदि
- सरल चार खण्ड प्रारूप – यह मेरी पुस्तक है।
- प्रश्न प्रारूप – तुम क्या खा रहे हो?

संरचनात्मक शिक्षण योजना में वाचन पर बल दिया जाता है। बोल–चाल के द्वारा भाषायी कौशलों के विकास के साथ–ही विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी होती है, जो प्राथमिक कक्षाओं के लिए आवश्यक है।

iv. कहानी शिक्षण योजना – कहानी कहना एक प्राचीन कला है जिसके द्वारा किसी विषय य घटना को मनोरंजक बनाकर उसका ज्ञान सरलता एवं सफलता से विद्यार्थियों को प्रदान किया जा सकता है। साथ–ही इसके द्वारा पाठों में पाठ्य–विषय के प्रति सोच एवं उत्साह को जागृत किया जा सकता है। इसके लिए हमें कुछ सावधानी बरतनी चाहिए। कहानी कहने वाले को कहानी पूरी तरह याद होनी चहिए। सुनाने के क्रम में धारा प्रवाहिता, क्रमबद्धता व मनोरंजन का गुण होना चाहिए। मुख्य वाक्यों एवं वार्त्तालापों को बार–बार दुहराना चाहिए तथा इसमें सरल एवं स्पष्ट शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। वाक्य छोटे–छोटे होने चाहिए। कहानी उद्देश्यहीन नहीं होनी चाहिए।

v. पाठ योजना – इसमें पाठ के लक्ष्य के अनुरूप विषय–वस्तु का नियोजन किया जाता है ताकि लक्ष्य से भटकाव नहीं हो सके। इसमें पाठ को छोटे–छोटे अंशो में बाँट दिया जाता है।

पाठ नियोजन के निम्न प्रमुख कारक हैंः–

(क) **अलिखित/लिखित नियोजन** – कक्षा में पढ़ाये जाने वाले पाठ के प्रति पूर्व में ही शिक्षक अपनी योजना बना लेते हैं। इसके कारण कक्षा–कक्ष में समय का कोई अपव्यय नहीं होता है।

(ख) **विस्तृत एवं सूक्ष्मपाठ योजना** – विद्यालयों में 35–45 मिनट के ही प्रतिदिन विषय के शिक्षण कार्य होते हैं। इसलिए विस्तृत पाठयोजना बनाना आवश्यक है। पाठ नियोजन हेतु छात्राध्यापकों में विभिन्न कौशलों की दक्षता प्राप्त कराने हेतु पाँच से दस मिनट की सूक्ष्म पाठ योजना बनाई जाती है।

(ग) **इकाई पाठयोजना** – कक्षा में बड़े पाठ को पढ़ाने के पूर्व पाठ को अंशों में बाँटकर पढ़ाने की प्रक्रिया इकाई पाठ योजना है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को सरलता एवं आसानी से स्पष्ट रूप से पढ़ाया जा सकता है।

(घ) **दैनिक व वार्षिक पाठयोजना** – शिक्षक अपनी पाठ्यपुस्तक को दैनिक व वार्षिक आधार पर बाँटते हैं जिससे बच्चे को पाठयवस्तु की पर्याप्त जानकारी वर्ष के अन्त में हो जाती है।
पाठयोजना के कई उपागम हैं, जैसेः–हर्बट उपागम, ब्लूम उपागम इत्यादि

vi. रचनात्मक शिक्षण योजना – रचना का अर्थ सजाना या क्रमबद्ध करना है। हिन्दी भाषा के शिक्षण में रचना शिक्षण के अन्तर्गत प्रारंभिक कक्षाओं में वाक्य रचना का विशेष महत्त्व है। बालक प्रारंभ में शब्द एवं बाद में वाक्य बोलता है। सार्थक ध्वनियों के समूह से शब्द/पद का निर्माण होता है। शब्दों से वाक्य की रचना होती है। हिन्दी वाक्य की रचना में **शब्दों का क्रम** निश्चित होता है जैसेः– कर्त्ता, कर्म, क्रिया,

राम आम खाता है।

इसमें राम– कर्त्ता
आम– कर्म
खाता है– क्रिया

प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों की भाषा की योग्यता अल्प रूप में विकसित होती है। इस स्तर पर निम्नलिखित ढंग से रचना कार्य लाभप्रद होते हैं। वाक्य रचना में परिचित विषय पर जोर दिया जाता है।

वाक्य रचना – जैसे – कुर्सी (शिक्षक द्वारा)
छात्र द्वारा – लकड़ी की बनी होती है।
यह हमारे घर में है।
टिप्पणी – निम्न शब्दों से वाक्य रचना करनाः–
कलम, मोटर, घर
रिक्त स्थानों की पूर्ति करनाः–
जैसे – मोहन .... जाता है। (घर)
टिप्पणी – राम .... खाता है।
शिक्षक .... है।

रंगों का प्रयोग –
फूलों का रंग :–

कर्त्ता को जोड़ना
उदाहरण – .... स्कूल जाता है। (राम)
टिप्पणी – .... खाता है।
.... पढ़ता है।

vii. **समग्र भाषा शिक्षण योजना –** समग्र भाषा शिक्षण योजना के अन्तर्गत कक्षा–कक्ष का गहराई से अवलोकन किया जाता है। इसमें किसी परिभाषा एवं सिद्धान्त को कठोरता से नहीं लागु किया जाता है। इसमें कई सिद्धान्त एवं प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं। इसमें हर कक्षा भिन्न होती है जिसमें एक निश्चित रणनीति जरूर शामिल होती है। इस योजना में बच्चों की आयु एवं मानसिक स्तर का विशेष प्रभाव नहीं होता है। इसमें शिक्षक की भाषा बच्चों के परिवेश से संबंधित होती है।

शिक्षक को प्रत्येक दिन बच्चों को कहानी/कविता सुनाना पड़ता है, पढ़ने के लिए देना पड़ता है। इसमें गाना, चुटकुले, पहेलियाँ किसी घटना या स्थान की चर्चा करनी पड़ती है। इस प्रक्रिया में बच्चे अर्थ, भाव एवं तर्क का निर्माण करते रहते हैं। इससे बच्चों में अपने आसपास के परिवेश की समझ बढ़ती है। वे कहानियाँ, चुटकुले, एवं पहेलियों के रूप में अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करने लगते हैं। वहाँ का परिवेश बच्चों को पढ़ने–लिखने के लिए बेहतर आधारभूत सामग्री होता है। इसमें भी कहानी अन्य विधाओं के अपेक्षा बेहतर है क्योंकि इसके द्वारा व्याकरण, जैसे – वाक्य रचना, शब्द रचना आदि का भी अनुमान लगाते हैं। जैसे – राम आम खाता है। गाय चरती है। भैंस चरती है। इत्यादि। वे जोड़–तोड़ के द्वारा भाषा का विकास करते हैं।

बोलने के अलावा इस योजना में लेखन का कार्य भी होता है। इससे नये विचारों का निर्माण सहपाठियों के समक्ष प्रस्तुत करने की क्षमता भी विकसित होती है। इसमें समाचार, रिर्पोटिंग चुटकुले की शैलियाँ इत्यादि से भी परिचित होते है। इसके द्वारा स्वअनुभव की अभिव्यक्ति, कौशल का विकास होता है। इस योजना में पढ़ने–लिखने के दौरान बच्चे जो अर्थ निकालते हैं और अपने अनुभव को जोड़कर भाषा संबंधी विकास करते हैं वह व्यक्तिगत एवं सामाजिक सहयोग से संभव होता है। इसमें बहुभाषिकता के प्रयोग को बाधा के रूप में नहीं संसाधन के

रूप में देखा जाता है। विषय—वस्तु का चयन बच्चों की सोच एवं आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

समग्र भाषा शिक्षण योजना के लिए निम्न बातों पर जोर दिया जाता है—

- बच्चों के अनुभवों का उपयोग
- विषय—वस्तु चुनने की आजादी
- जिम्मेदारी देना
- गलतियों को स्वीकार करना
- मानकीकृत भाषा के अर्थ पर जोर
- भाषायी कलाओं का एकीकरण आदि

विषय—वस्तु के क्षेत्र में बच्चे विज्ञान, कला, संगीत जिन्दगी के महत्त्वपूर्ण पक्षों को ले सकते हैं। शिक्षक को कक्षा का वातावरण दीवारों, बैठक व्यवस्था को बेहतर बनाना चाहिए। अभिभावकों की भागीदारी भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे अधिकांश समय माता—पिता के साथ रहते हैं। इस योजना के द्वारा शिक्षक स्वयं का बेहतर मूल्यांकन कर पाता है।

viii. **प्रश्नोत्तर योजना —** इस योजना में शिक्षक विद्यार्थियों से प्रश्न पूछते हैं? विद्यार्थी उसका उत्तर देते हैं। इस योजना द्वारा विद्यार्थियों में मौखिक एवं लिखित दोनों योग्यताओं का विकास होता है।

	विद्यार्थी का उत्तर
प्रश्नः— किस गाँव में रहते हो?	उत्तरः— कर्णपुरा
प्रश्नः— उस गाँव के उत्तर में कौन—सा गाँव है? उत्तरः—	चकबैरिया

ix. **चित्र रचना —** इस शिक्षण योजना में शिक्षक कक्षा की दीवार पर कोई चित्र टाँग देते हैं चूँकि बालकों में चित्र के प्रति स्वाभाविक रूचि होती है। वे चित्रों को देखकर वाक्य की रचना करते हैं, जैसे — वह चित्र किसका है?

छात्र का उत्तरः— महात्मा गाँधी का।

हिन्दी का रचनात्मक शिक्षण और कक्षा प्रक्रियाएँ

विद्यालय आने वाले बच्चे का मस्तिष्क कोरी स्लेट की तरह नहीं होता है बल्कि वह अपने साथ अपने अनुभव व समझ पर आधारित ज्ञान अर्जित कर के विद्यालय में प्रवेश करता है। रचनात्मक शिक्षण उपागम के अनुसार ज्ञान का संगठन आधारभूत संरचनाओं से होता है। ऐसे में बच्चे तभी बेहतर सीख सकते हैं जब उन्हें उनकी समझ जो उनके अनुभवों पर आधारित हो पर सोचने की छूट दी जाए। रचनात्मक शिक्षण प्रक्रिया में अधिगमकर्ता अर्थात विद्यार्थी ही सर्वोपरि होता है। वह अर्थ व ज्ञान का निर्माता होता है। अतः रचनात्मक शिक्षण उपागम मूल रूप से रचनात्मक शिक्षण और पियाजे के बाल्यावस्था, विकास तथा शिक्षा शोध पर आधारित होता है। चूँकि अधिगम का आधार ज्ञान है, अतः बच्चा पहले से ही बहुत कुछ जानता है। उस आधारभूत ज्ञान को ही स्कीमा की संज्ञा दी गई है।

रचनात्मक शिक्षण प्रक्रिया की विशेषताएँ

अधिगमकर्ता की सक्रियता

प्रत्येक बच्चे पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर एक–दूसरे से भिन्न होते हैं। प्रत्येक के सीखने में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ एक कारक होती है। ऐसे में शिक्षा का बाल–केंद्रित होना आवश्यक है। बच्चों की उनकी अपनी बोलियाँ, अनुभव तथा सक्रिय भागीदारी को रचनात्मक शिक्षण में प्रमुख महत्त्व देना होगा। विद्यालय शिक्षण के परंपरागत प्रक्रिया जहाँ शिक्षक ही ज्ञान का भंडार व सर्वोपरि है इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। अतः बच्चे के पास जो कुछ भी पहले से मौजूद है जिसे लेकर वह विद्यालय आया है, उसकी कद्र होनी चाहिए। विद्यालय व शिक्षक को चाहिए कि वे सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करे। विद्यालय व कक्षा में ऐसे वातावरण का निर्माण हो जहाँ बच्चे खुद से अभ्यास करे, सवाल पूछे तथा स्वाभाविक तौर पर सक्रियता के साथ अधिगम प्रक्रिया में भाग लें।

विद्यार्थी केन्द्रित गतिविधियाँ

सीखने की प्रक्रिया में शिक्षार्थी सर्वोपरि होता है। विद्यार्थी अपने अनुभव के आधार पर विद्यमान विचारों के साथ नए विचारों को जोड़ते हुए खुद के ज्ञान का विकास सक्रियतापूर्वक करता है। सीखने की प्रकिया में शिक्षार्थी अपने अनुभव के आधार पर जैसे–जैसे आगे बढ़ता है, रचना और पुनर्रचना के विचार उसकी मूलभूत विशेषता बन जाते हैं।

रचनात्मक शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एक सुगमकर्ता के रूप में होता है। एक अच्छे शिक्षक बच्चों के ज्ञान निर्माण प्रक्रिया को सुगम बनाता है। बच्चे को सवाल पूछने की स्वतंत्रता अपने शब्दों में अपने अनुभवों के आधार पर उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करने तथा बच्चों की समझ विकसित करने सहायक की भूमिका निभाता है।

रचनात्मक कक्षा प्रक्रिया छात्र–केन्द्रित होता है। जहाँ विद्यार्थी अधिगम की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते है। विद्यार्थियों की स्वायतता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थी को सामूहिक कार्यो में संलग्न किया जाता है। अधिगम एक अंतःक्रिया होती है और इस अंतःक्रिया का आधार विद्यार्थी का पूर्व ज्ञान होता है। रचनात्मक कक्षा प्रक्रिया के अन्तर्गत सीखने की प्रक्रिया, कार्यवाही और भाषा दोनों माध्यमों से अपने चारों ओर के पर्यावरण, प्रकृति, वस्तुओं और लोगों के साथ परस्पर क्रिया के माध्यम से सम्पन्न होती है।

समेकन

विद्यार्थियों के व्यवस्थित अधिगम में पाठ योजना की अहम भूमिका होती है। पाठ योजना के निर्माण में हमें बच्चों की प्रकृति, विषय की प्रकृति और कक्षा की परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को कक्षा में इतनी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए कि भाषा का निःसंकोच उपयोग वह कर सके।

पाठ योजना निर्माण में लचीलापन होना चाहिए जो विषय से भटके बिना कक्षा की वर्तमान परिस्थिति और बच्चों के विचार को अपने साथ संलग्न कर सके।

हिन्दी भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ

दुनिया में जितनी भी भाषाएँ हैं, उनकी अपनी सामाजिक, संस्कृतिक, संवैधानिक एवं आर्थिक स्थितियाँ हैं। इसी के अनुरूप उसकी शैक्षिक स्थातियाँ एवं समस्याएँ भी होती हैं एवं चुनौतियाँ भी होती है। भारत की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अन्य देशों से भिन्न है। इस कारण यहाँ कई भाषाएँ बोली जाती हैं। भारत में हिन्दी संपर्क भाषा के साथ चालीस प्रतिशत से ज्यादा लोगों की मातृभाषा है। उत्तर भारत में जहाँ हिन्दी का मातृ भाषा के रूप में प्रारम्भिक स्तर पर अध्ययन होता है, वहीं दक्षिण भारत में इसका अध्यापन द्वितीय भाषा के रूप में होता है। उत्तर भारत में हिन्दी की कई उपभाषाएँ, जैसे – मगही, भोजपुरी, ब्रज अवधी, मैथिली इत्यादि अपनी विशिष्ट पहचान रखती है।

भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक, स्थानिक एवं प्रादेशिक भिन्नता के कारण हिन्दी भाषा के शिक्षक को हिन्दी भाषा का शिक्षण कराते समय अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें निम्न प्रमुख हैः–

उदेश्य प्राप्ति की चुनौतियाँ

हिन्दी भारत की अधिकांश जनता की मातृभाषा है। साथ–ही जन साधारण में सम्प्रेषण और वस्तुओं से जुड़ने के रूप में भी है, जिसे प्रायः ध्यान नहीं दिया जाता है। बालक की भाषा उसके दृष्टिकोण, उसकी क्षमताओं निश्चित आकार देती है।

1. भाषा शिक्षक का उद्देश्य पाठय पुस्तक के नहीं है बल्कि विद्यार्थियों को भौगौलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षण सामग्री का प्रसार का व्यापक स्तर पर प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों की अधिकतम भाषिक कौशलों यथा सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना, अभिव्यक्ति आधारभूत कौशलों का सम्यक विकास पर जोर देना है। इन्हीं के अनुरूप हिन्दी शिक्षण के कौशल भी निर्धारित होते हैं।

   प्रारंम्भिक कक्षाओं में सुनना एवं बोलना क्षमताओं के अनुचित विकास होने की चुनौतियाँ होती है।

2. **हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति जनमानस में नकारात्मक सोच**

हिन्दी भाषा के प्रति जनमानस में नकारात्मक सोच के कारण है कि अभी भी ज्ञान–विज्ञान रोजगार एवं सम्मान की भाषा नहीं बन पाती है। बच्चे व अभिभावक द्वारा शुरू से ही अंग्रेजी भाषा के प्रति सम्मान की भावना ज्यादा होती है।

3. हिन्दी शिक्षण योजना, स्थानीयता, मानकता एवं खुलापन जैसी चुनौतियाँ

हिन्दी शिक्षण योजना में शिक्षक शिक्षण को प्रभावशाली एवं विधार्थियों के लिए ज्यादा उपयोगी बनाने के लिए स्थानीयता का समावेश आवश्यक है। जबकि पाठ्यपुस्तकों में कम ही इसका उपयोग होता है। शिक्षक की शिक्षण योजना बच्चे के भौगोलिक, सांस्कृतिक परिवेश ,स्थानीयता से प्रभावित होती है। शिक्षक को वहाँ के भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इत्यादि परिवेश से शहरों से जुड़ना आवश्यक है। ऐसा होने पर ही बच्चों के लिए अधिकतम जानी पहचानी शिक्षण सामग्री मिल जाती है एवं वे सक्रिय रूप से कक्षा–कक्षा में उत्साहित होकर भाग लेते हैं। हिन्दी की भाषिक भिन्नता विशेषतः ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में पायी जाती है। बिहार की अपनी भौगोलिक एवं सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति विशिष्ट होने के कारण हिन्दी की शिक्षण योजना की विशिष्ट चुनौतियाँ है। इन चुनौतियों का हिन्दी शिक्षण की योजना बनाते समय हिन्दी शिक्षक को सामना करना पड़ता है। जैसे यदि हिन्दी भाषा का शिक्षक भोजपुरी, भाषी क्षेत्र में प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षण कार्य करता है तो, वहाँ की सांस्कृतिक, जानकारी के अभाव में अपने को असहज महसूस करता है, जैसे – मैथिली में लताम (अमरूद फल), भोजपुरी में बनी अमरूद तथा मानक शब्द अमरूद की जानकारी द्वारा बच्चों की सक्रिय भागीदारी हो सकती है।

कक्षा में पढ़ाई जाने वाली हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तकों पर आधारित होती है, जबकि बच्चे अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं स्थानीय बोली, जैसे – भोजपुरी, मगही, आंगिका, बज्जिका इत्यादि से प्रभावित होते हैं। पाठ्यपुस्तक में परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी शिक्षक हिन्दी शिक्षण योजना में परिष्कृत भाषा को मानक मानते हुए प्रायः पुस्तकीय भाषा का प्रयोग करते हैं जिससे स्थानीय भाषा की अवहेलना हो जाती है और हिन्दी भाषा शिक्षण जीवंत नहीं हो पाती है। शिक्षक को हिन्दी भाषा शिक्षण की योजना बनाते समय स्थानीयता की अवहेलना न कर खुले रूप में उसे स्वीकार करना चाहिए। शिक्षक पेशा में स्थानीय बोली व मानक भाषा के बीच कितनी मात्रा में एवं किस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जाए एक बड़ी चुनौती होती है।

4. उत्कृष्ठ पाठ्य–पुस्तकों का अभाव

हिन्दी शिक्षण योजना के निर्माण में एक विशिष्ट एवं गंभीर समस्या संतुलित पाठ्यपुस्तकों का अभाव है जो प्रारम्भिक कक्षाओं के विधार्थियों में सोच–समझ एवं संवाद का विकास करे। पाठ्यपुस्तक प्रारम्भिक कक्षाओं के विधार्थियों के परिवेश से संपूर्णता से जुड़ने में सक्षम नहीं है। यह भी भाषा शिक्षण योजना की एक गंभीर चुनौती है।

5. वर्तनी, लेखन, वाचन, एवं उच्चरण संबंधी चुनौतियाँ

शुद्ध लिखना–बोलना एक कला है। शुद्ध लिखना शुद्ध बोलने से जुड़ा है। हिन्दी भाषा में वर्तनी एवं लेखन संबंधी अशुद्धियाँ बच्चों के परिवेश के साथ–ही उनमें पायी जाने वाली शारीरिक अक्षमता तथा

कान, होंठ, जीभ, हाथ, इत्यादि से भी प्रभावित होती है लेकिन सबसे ज्यादा प्रभाव बच्चों के परिवेश का प्रभाव पड़ता है जैसे उसके परिवेश में यज्ञ को जश कहा जाता है आदि।

प्रारंभिक कक्षाओं के विद्यार्थी विद्यालय शिक्षण एवं परिवेश में वार्तालाप में भाषागत भिन्नता होने की स्थिति में दुविधाग्रस्त हो जाते हैं। इस परिस्थिति में उनके लेखन, वाचन, उच्चारण वर्तनी इत्यादि में अशुद्धियाँ होती रहती हैं। यह भी एक गंभीर समस्या है।

6. हिन्दी शिक्षण योजना में शिक्षण विधियों से संबंधित चुनौतियाँ

प्रारंम्भिक कक्षा के विद्यार्थियों के शिक्षण योजना में मुख्यतः कहानियों, कविताओं, आर्दशवाचन, अनुकरण वाचन का सहारा लिया जाता है। इसके बाद पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्नोत्तर का सहारा लेते हुए पाठ्यक्रम पूरा किया जाता है। प्रायः शिक्षक आगमन एवं निगमन विधि का ही सहारा लेते हैं जिसका अपना सीमित स्थान है। सभी शिक्षण विधियों में योजना विधि एवं समग्र भाषा पद्धति वर्तमान में ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए शिक्षक को ज्यादा योग्य एवं खुलेपन का समर्थक होना आवश्यक है। इन्हीं विधियों में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी ज्यादा हो पाती है, अन्य में नही हो पाती है।

7. भाषा शिक्षण में प्रयुक्त सहायक शिक्षण सामग्री संबंधित चुनौतियाँ

हिन्दी भाषा शिक्षण की योजना में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए जो सहायक सामग्री उपलब्ध है वह अपर्याप्त है। उनके लिए टेप रिर्कांडर, लिंग्वा फोन, टेलिविजन, अति आवश्यक है। इसके बिना हिन्दी भाषा शिक्षण की योजना प्रभावशाली एवं सार्थक नहीं हो सकती है। इनका अभाव भी एक चुनौती है।

8. कक्षा का वृहत आकार एवं उसकी अवस्थिति

सरकारी विद्यालयों में एक कक्षा में 100 से भी ज्यादा बच्चे रहते हैं जिसके कारण कक्षा में सामान्य एवं निम्न क्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद नहीं हो पाती है। अधिकांश विद्यालयों की अवस्थिति व्यस्त सड़कों एवं स्थानों पर होती हैं जिसका कारण शोर–गुल भरे माहौल हिन्दी भाषा शिक्षण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

इकाई–3

हिन्दी का व्यावहारिक व्याकरण और वर्तनी

भाषा का अर्थ

मानव जीवन और भाषा परस्पर संबंधित संकल्पनाएँ हैं। मानवीय अस्तित्व भाषा के साथ इस प्रकार संबद्ध है कि एक के अभाव में दूसरे का स्वरूप ही स्पष्ट नहीं होता। मानव जाति की यह अपनी विशेषता है, मनुष्य प्रकृति की श्रेष्ठ रचना है। सभी प्राणियों में केवल मानव ही ऐसा प्राणी है जो अपनी अभिव्यक्ति को दूसरों तक पहुँचा सकता है तथा दूसरे की अभिव्यक्ति को समझ सकता है। प्रत्येक सामान्य मानव शिशु में भाषाई क्षमता जन्म से ही विद्यमान होती है। मानव शिशु समाज के बीच जन्म लेता है, जहाँ सामाजिक रीतियों, परंपराओं, नियम कानून को भाषा के माध्यम से सीखता है। भाषा वह साधन है जिसके द्वारा एक प्राणी दूसरे प्राणी के समक्ष अपने विचार, भाव या इच्छा प्रकट करता है। भाषा संप्रेषण का वह साधन है जिसके माध्यम से मानव, समाज में अपने विचारों तथा भावों को संप्रेषित करता है। अतः व्यक्ति तथा समाज के विकास में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'भाषा' शब्द संस्कृत के भाष् धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है, व्यक्त वाणी। व्यक्त वाणी या वाचिक भाषा से ही संभव है।

भाषा की परिभाषा

स्वीट, 'ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।'

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, 'भाषा यादृच्छिक मौखिक प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसके द्वारा मनुष्य समाज एवं संस्कृति के सदस्य होने के नाते परस्पर विचारों एवं कार्यों का आदान–प्रदान करते हैं।'

डॉ. भोलानाथ तिवारी, 'भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।'

भाषा की संरचना

भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है। ध्वनियों के सार्थक संयोजन से शब्द बनते हैं और शब्दों से वाक्य। यह भाषा संरचना की परम्परागत अवधारणा है। वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इसके खंड और टुकड़े नहीं किए जा सकते। वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं और शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

वर्ण

उच्चरित ध्वनियों को कुछ लिखित चिन्हों के माध्यम से जब लिखकर बताना होता है तब उनके लिए कुछ लिखित–चिन्हों बनाए जाते हैं। ध्वनियाँ 'वर्ण भाषिक वाले ये लिपि–चिन्हों ही 'वर्ण' कहलाते हैं। 'वर्ण भाषिक ध्वनियों के लिखित रूप होते है।' ये ही भाषा की लघुतम इकाई है। वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके टुकड़े या खंड न किए जा सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

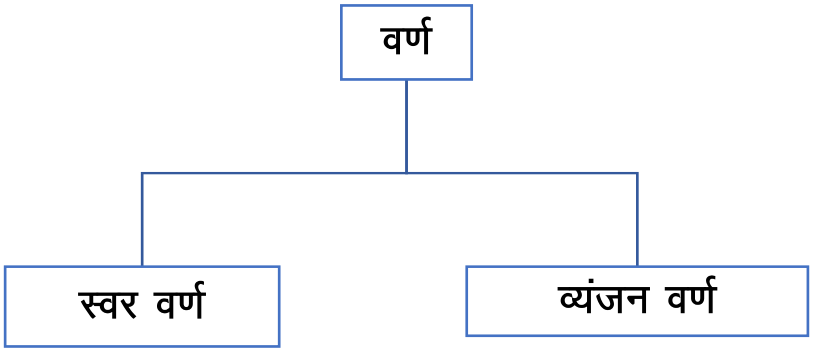

वर्णमाला किसे कहते हैं?

वर्णों के क्रमबद्ध समूह को ही वर्णमाला कहते हैं।

वर्णमाला

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ	11 स्वर
अं अः	2 अयोगवाह
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म	25 स्पर्श व्यंजन
य र ल व	4 अंतःस्थ व्यंजन
श ष स ह	4 ऊष्म व्यंजन
क्ष त्र ज्ञ श्र	4 संयुक्त व्यंजन
ड़ ढ़	2 उत्क्षिप्त व्यंजन
कुल वर्ण संख्या	52

हिन्दी वर्णमाला में कुछ 52 वर्ण हैं,
जिसमें 11 स्वर और 33 व्यंजन है।

स्वर

जिन ध्वनियों या वर्णों के उच्चारण में अन्य वर्णों की सहायता न लेनी पड़े, उन्हें स्वर कहते हैं।

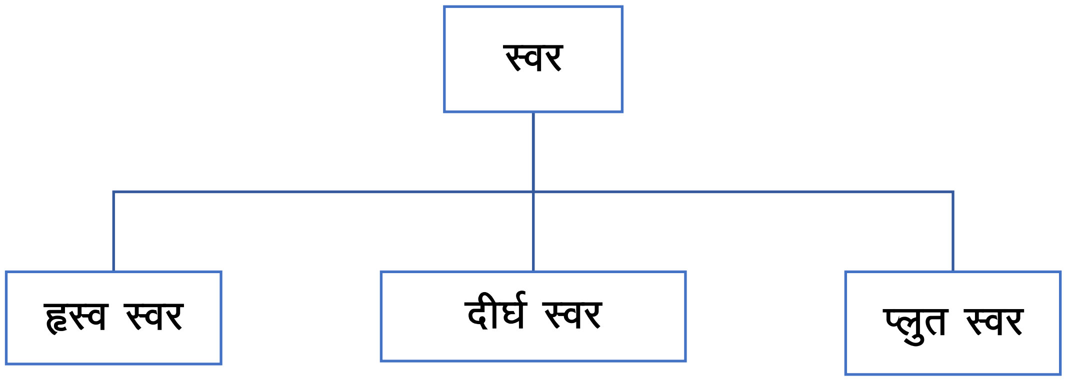

1. **ह्रस्व स्वर** –जिन स्वरों के उच्चारण में कम–से–कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं या जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे अ, इ, उ, ऋ ये चारों मूल स्वर हैं।
2. **दीर्घ स्वर** – जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर में दोगुना समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं या जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं।
   आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ये दीर्घ स्वर हैं। इनकी संख्या 7 है।
3. **प्लुत स्वर** – जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुणा अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं या जिन स्वरों के उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है, इन्हें त्रिमात्रिक स्वर भी कहते हैं, जैसे – ओइम, हे राम!

व्यंजन वर्ण

वह ध्वनि जो स्वरों का अनुसरण कर उच्चरित होते हैं, जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है वे व्यंजन वर्ण कहलाते हैं। हिन्दी वर्णमाला में व्यंजनों की संख्या 33 है।

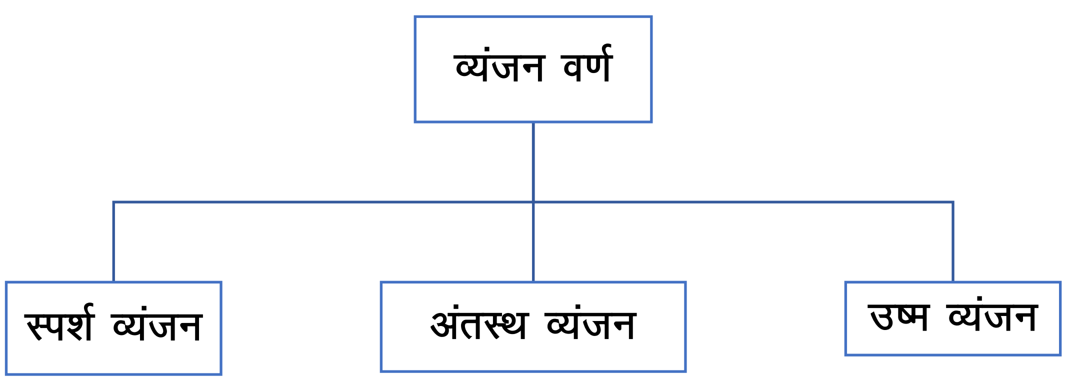

1. **स्पर्श व्यंजन –** जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण में श्वास–वायु मुख के अलग–अलग भागों को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 25 है।
2. **अंतःस्थ व्यंजन –** हिन्दी वर्णमाला के कुछ व्यंजन, स्वर तथा व्यंजन के मध्य आते हैं। इन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 4 है। य र ल व
3. **ऊष्म व्यंजन –** वे व्यंजन जिनके उच्चारण के समय वायु मुख से रगड़ खाकर गर्म हो जाती है। अर्थात् मुख से गर्म वायु निकलती है, उन्हें उष्म व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 4 है। ज्ञ, ष, स, ह

संयुक्त व्यंजन

दो व्यंजनों के मेल से बने वर्ण को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 4 है।

क् + ष – क्ष
त् + र – त्र
ज् + अ – ज्ञ
श् + र – श्र

शब्द

शब्द विचार हिन्दी व्याकरण का दूसरा खंड है। एक या एक–से–अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि शब्द कहलाता है। उदाहरण के लिए क, म तथा ल के मेल से 'कमल' बनता है जो एक खास किस्म के फूल का बोध कराता है। अतः कमल एक शब्द है। कमल की ही तरह 'लकम' भी इन्हीं तीन अक्षरों का समूह है किन्तु यह किसी अर्थ का बोध नहीं कराता है। इसलिए यह शब्द नहीं है।

उत्पत्ति के आधार पर शब्द के भेद

उत्पत्ति के आधार पर शब्द से चार भेद हैंः–

1. तत्सम
2. तद्भव
3. देशज
4. विदेशज

1. **तत्सम –** जो शब्द संस्कृत भाषा से हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के ले लिए गए हैं वे तत्सम कहलाते हैं, जैसे – धन, नारी, पुष्प, जलज, वायु, रात्रि इत्यादि।
2. **तद्भव –** जो शब्द रूप बदलने के बाद संस्कृत से हिन्दी में आए हैं वे तद्भव कहलाते हैं। चूँकि ये शब्द संस्कृत से चलकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से होते हिंदी तक पहुँचे हैं, अतः इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है, जैसे – 'दही' शब्द 'दधि' से 'कान्ह' शब्द 'कृष्ण' से विकसित होकर हिंदी में आए हैं।
3. **देशज –** जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, वे देशज कहलाते हैं, जैसे – भोंदू, पगड़ी, लोटा, झकझक इत्यादि।
4. **विदेशज –** विदेशी जातियों के संपर्क से उनकी भाषा के बुहत–से शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी अथवा विदेशज कहलाते हैं। हिन्दी में अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी,

पुर्तगाली इत्यादि भाषाओं के अनेक शब्द आज हिंदी के अपने बन गए हैं, जैसे – अंग्रेजी, कॉलेज, पेंसिल, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर, टिकट, इंजन, मशीन, स्वेटर इत्यादि।

फारसी – अनार, चश्मा, जमींदर, दरबार, रूमाल, आदमी इत्यादि।
अरबी – औलाद, अमीर, कलम, औरत, गरीब इत्यादि।
पुर्तगाली – अचार, चाबी, कमीज, तौलिया इत्यादि।
फ्रांसीसी – पुलिस, कार्टून, इंजीनियर इत्यादि।
चीनी – तूफान, चाय, पटाखा इत्यादि।
यूनानी – टेलीफोन आदि।
जापानी – रिक्शा आदि।

वाक्य

वाक्य विचार हिन्दी व्याकरण का तीसरा खंड है। शब्दों के सार्थक समूह को जिसका पूरा–पूरा अर्थ निकलता है, वाक्य कहते हैं, जो भावों एवं विचारों को पूर्णता एवं स्पष्टता से व्यक्त करने वाला सार्थक एवं व्यवस्थित पद–समूह (शब्द–समूह) होता है।

वाक्य के दो अनिवार्य तत्व होते हैंः–

1. उद्देश्य
2. विधेय

जिसके बारे में बात की जाय उसे उद्देश्य कहते हैं और जो बात की जाय उसे विधेय कहते हैं।
उदाहरण – मोहन जाता है।
इसमें 'मोहन' उद्देश्य है और 'जाता है' विधेय है।

वाक्य के भेद

वाक्य का भेद करने के दो आधार हैं – अर्थ और रचना।

1. अर्थ के आधार पर वाक्य में भेद

अर्थ के आधार पर आठ प्रकार के वाक्य होते हैंः–

i. विधान वाचक वाक्य
ii. निषेध वाचक वाक्य
iii. प्रश्नवाचक वाक्य
iv. विस्मयादिवाचक वाक्य
v. आज्ञावाचक वाक्य
vi. इच्छावाचक वाक्य
vii. संदेहवाचक वाक्य
viii. संकेतवाचक वाक्य

i. **विधानवाचक वाक्य –** जिन वाक्यों में क्रिया के करने अथवा होने का सामान्य बोध हो, उन्हें विधानवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे – सीमा कल दिल्ली जाएगी।

ii. **निषेधवाचक वाक्य –** जिन वाक्यों में कार्य का न होने का बोध होता है, जैसे – आप वहाँ नहीं जाए।

iii. **प्रश्नवाचक वाक्य –** इन वाक्यों में मूल में जिज्ञासा (जानने की इच्छा) होती है। इनमें प्रश्न पूछा जाता है, जैसे – तुम कहाँ रहते हो?

iv. **आज्ञावाचक वाक्य –** जिन वाक्यों में आज्ञा या अनुमति का बोध हो, उसे आज्ञा वाचक वाक्य कहते हैं, जैसे – अब आप जा सकते हैं।

v. **विस्मयादिवाचक वाक्य –** जिन वाक्यों में हर्ष, शोक, घृणा, आश्चर्य जैसे भाव व्यक्त हों उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं, जैसे – अहा! कैसे सुन्दर दृश्य है। छिःछिः! कितना गंदा है। वाह!

vi. **इच्छावाचक वाक्य –** जिन वाक्य से कर्ता की इच्छा, कामना, आशा, या आशीर्वाद का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं, जैसे – ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें।

vii. **संदेहवाचक वाक्य –** जिन वाक्यों में कार्य के होने में संदेह (शंका) हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं, जैसे – शायद आज वर्षा हो।

viii. **संकेतवाचक वाक्य –** जिन वाक्यों में एक क्रिया के दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का बोध हो, उन्हें संकेत वाचक वाक्य कहते हैं, जैसे – यदि वह आएगा, तो मैं जाऊँगा।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

i. सरल वाक्य
ii. संयुक्त वाक्य
iii. मिश्रित वाक्य

i. **सरल वाक्य –** जिस वाक्य में एक–ही उद्देश्य और एक–ही विधेय हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं। उदाहरण – राम क्रिकेट खेलता है।

ii. **संयुक्त वाक्य –** जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य किसी योजक द्वारा जुड़े हो, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। उदाहरण – राहुल विद्यालय जाता है और पढ़ाई करता है।

iii. **मिश्रित वाक्य –** जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और दूसरा उस पर आश्रित उपवाक्य हो, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। उदाहरण– भोजन करने का मतलब है कि मनुष्य स्वस्थ बने।

संदर्भ आधारित व्याकरण

प्रायः विद्यार्थियों के लिए व्याकरण शिक्षण एक ऐसे आतंक की तरह उपस्थित होता है कि उनमें व्याकरण शिक्षण भय पैदा करता है। विद्यार्थी जिस विषय से डर जाता है, उसे वह कभी ठीक से नहीं सीख सकता। आमतौर पर, विद्यालयों में व्याकरण की परिभाषा तथा भेदों उपभेदों को याद कराया जाता है। इससे परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त तो हो जाते हैं लेकिन बच्चों का समझ विकसित नहीं हो पाता है। व्याकरण पढ़ने–पढ़ाने का सबसे प्रचलित तरीका निगमन विधि है। अर्थात्, पहले नियम (सामान्य तत्व), फिर उदाहरण अर्थात् विशेष तत्व की ओर जाना अर्थात् सामान्य से विशेष की ओर जाना।

लेकिन स्वभावतः हमारी चेतना पहले विशेष तत्व को ग्रहण करती है, फिर सामान्य तत्व को। प्रचलित व्याकरण शिक्षण इसके ठीक उल्टा है। अतः भाषा के शिक्षक के लिए यह जरूरी है कि वह अनुभवों से भाषा को जोड़कर पढ़ाए। उन्हें ऐसा वातावरण उत्पन्न करना होगा जिसमें बच्चे भाषा को लगातार जीवन के अनुभवों और चीजों से जोड़ सकें।

व्याकरण सीखने की क्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए विद्यार्थियों को व्याकरण सीखने के क्रम में करके सीखने पर जोर दिया जाना चाहिए। व्याकरण सीखते समय बच्चों को पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए ताकि वे अपने विचारों को सहजता से प्रकट कर सकें। जो कुछ भी सीखा है, उसे व्यवहार में लाकर अपने परिवेश से जोड़कर देख सकें। बच्चा जब व्याकरण सीखता है तो संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण पद्धति अधिक रूचिकर होती है।

संदर्भ आधारित व्याकरण क्या है?

जब भाषा करके सीखी जाए तब हम उसे संदर्भ आधारित व्याकरण सीखना कहते हैं। व्याकरण शिक्षण को सफल बनाने के लिए रोजमर्रा की कक्षाओं में क्रियाओं का हिस्सा बनाना होगा। व्याकरण को सीखने की नहीं समझने की जरूरत है।

एन.सी.ई.आर.टी. (दिल्ली) के तत्वाधान में तैयार की गयी 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005' में भाषा–शिक्षण के बारे जो कहा गया है वह व्याकरण शिक्षण के लिए भी समान रूप से उपादेय है, 'भाषा तब सीखी जाती है, जब भाषा के रूप में नहीं पढ़ायी जाती, बल्कि संदर्भों से जोड़कर उसे पढ़ाया जाता है। संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण का तात्पर्य है कि किसी खेल, संवाद, फिल्म या अन्य किसी माध्यम से संदर्भ प्रस्तुत किया जाए।'

संदर्भ में व्याकरण–शिक्षण का व्यावहारिक औचित्य

1. संदर्भ में व्याकरण–शिक्षण से बच्चों की रूचि व्याकरण की ओर होती है।
2. संदर्भ उसके मन में बैठ जाता है, जिससे उसको अलग से अभ्यास की जरूरत नहीं पड़ती।
3. संदर्भ में व्याकरण को समझना, बच्चे की भाषा को परिष्कृत और परिमार्जित बनाती है।
4. बच्चे भाषा–विशेष की संरचना को समझ जाते हैं।
5. संरचना समझकर वैसा नया प्रयोग खुद करने को प्रेरित होते हैं।
6. भाषा को और सृजनशील बनाने को प्रेरित होते हैं।

कक्षायी वातावरण में संदर्भ के माध्यम से व्याकरण को सीखना

संज्ञा को कहानी के माध्यम से सीखना

रौशन और राहुल अपने मित्र के साथ घूमने पर्यटन स्थल गये। वे लोग ट्रेन के माध्यम से पर्यटन स्थल पहुँचे। ट्रेन में बहुत भीड़ थी, जिसके कारण सफर का आनंद नहीं उठा पाए। गर्मी होने के कारण प्यास बहुत लगी हुई थी, पानी भी नहीं था। पर्यटन स्थल पहुँचने के बाद वे अपने मित्र के साथ खूब मस्ती किये। वहाँ तरह–तरह के पकवान खाए तथा खुशी–खुशी अपने मित्र के साथ घर आए।

हम इस कहानी के माध्यम से संज्ञा के भेदों को जानेंगे–

- व्यक्तिवाचक संज्ञा– रौशन, राहुल
- जातिवाचक संज्ञा– मित्र

- भाववाचक संज्ञा– खुशी खुशी
- समूहवाचक संज्ञा– भीड़
- द्रव्यवाचक संज्ञा– पानी

अतः किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। विद्यार्थियों के कक्षा के स्तर के अनुसार संज्ञा के विभिन्न उपभेदों से परिचय कराया जा सकता है।

सर्वनाम को कहानी के माध्यम से सीखना

सीमा ने अपने जन्मदिन पर बहुत सारे दोस्तों को अपने घर बुलाया। सीमा के घर में जन्मदिन के मौके पर तरह–तरह के पकवान बनाये गये। मित्र सीमा के लिए ढेर सारे खिलौने लाए। इसलिए सीमा बहुत खुश थी।

फिर बच्चों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाएगा कि यहाँ सीमा और दोस्त शब्द कई बार आए हैं। जिसके कारण कहानी पढ़ने में प्रवाह नहीं बन पा रहा है। रूकावट उत्पन्न हो रही है। अतः इस कहानी में सीमा और दोस्त शब्दों के दुहराव के बदले उसके, वे, वह इत्यादि शब्दों का प्रयोग कर देखते हैं।

इस प्रकार इस तरह के उदाहरण प्रस्तुत करने के बाद इस अवधारणा को स्पष्ट करना होगा कि वाक्य में प्रवाह बनाए रखने के लिए, दुहराव से बचने के लिए नाम के स्थान पर हम दूसरे शब्दों का प्रयोग करते हैं। संज्ञा की पुनरावृत्ति बचाने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है वे सर्वनाम कहे जाते हैं।

क्रिया को चित्र या गीत के माध्यम से बताना

बच्चों को क्रिया आधारित सुनाया जाए या उन्हें कुछ चित्र दिखाया जाए जिसमें क्रिया से संबंधित विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया हो। फिर उन्हें स्पष्ट किया जाएगा कि हम सारा दिन कुछ–न–कुछ करते हैं, जैसे –

मैं सुबह टहलता हूँ।
तुम दौड़ते हो।
वह पढ़ता है।
आप खाना खाते हो।

यहाँ इन वाक्यों में देखा गया है कि कुछ कार्य हो रहा है। वाक्यों में क्रमशः टहलने, दौड़ने, पढ़ने, खाने का काम हो रहा है। इसे ही हम क्रिया कहते हैं। अतः किसी काम के होने या करने का पता चले तो उसे हम क्रिया कहते हैं।

वर्ण को इस प्रकार पढ़ाया जा सकता है

विद्यार्थियों से पूछा जाए, पाँच फल का नाम बताएँ। वे शायद कहेंगे। आम, लीची, कटहल, सेब, अनार इत्यादि। फिर उनसे संवाद स्थापित करते हुए 'ब्लैक बोर्ड' पर लिखवाया जाए। फिर उनसे संवाद किया जाए, आओ एक शब्द 'कटहल' को देखते है–

इनके चार टुकड़े हो सकते है– क, ट, ह, ल,

'क', 'ट', 'ह' और 'ल' के भी दो–दो टुकड़े हो सकते जाते हैं–

क – क् + अ

ट – ट् + अ
ह – ह् + अ
ल – ल् + अ

अब – क्, अ, ट्, अ, ह्, अ, ल्, अ

के टुकड़े नहीं हो सकते। अतः यही ध्वनियाँ वर्ण हैं। इस प्रकार वह छोटी–से–छोटी ध्वनि जिसके खण्ड न किए जा सकें, वर्ण कहलाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पारंपरिक व्याकरण शिक्षण में जहाँ पहले सिद्धांत या नियम बताया जाता है, वहीं संदर्भ आधारित व्याकरण शिक्षण में पहले कुछ गतिविधियाँ करवाई जाती हैं, फिर उनसे बनी समझ के आलोक में व्याकरण के नियमों को आत्मसात करवाया जाता है। इस प्रकार बच्चों में व्याकरण की सार्थक समझ बनाना बेहद सरल काम हो जाता है। दुनिया की प्रत्येक भाषा नियमबद्ध होती है। व्याकरण के माध्यम से हम भाषा की वर्ण संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना और संवाद संरचना समझते हैं। जब इन संरचनाओं की समझ सदंर्भ के माध्मय से बनती है, तब हम भाषा के श्रेष्ठ कौशलों को हासिल करने में सक्षम होते हैं।

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का निराकरण/या सुधारने के उपाय

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारणों को दूर करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते है–

1. कक्षा में अध्यापक द्वारा शुद्ध उच्चारण कराना।
2. विद्यार्थियों से वर्ग में शुद्ध उच्चारण कराना।
3. बच्चों को सुलेख का अभ्यास कराना।
4. कक्षा में अधिकाधिक खड़ी बोली का प्रयोग करना।
5. विद्यार्थियों को लेखन कार्य देना और उसका बड़ी सावधानी से संशोधन करना।
6. विद्यार्थियों द्वारा अशुद्ध लिखे गये गये शब्दों का बार–बार अभ्यास कराना।
7. मुद्रण की अशुद्धियों का यथासम्भव संशोधन कराना।
8. श्रुतलेख का समय–समय पर अभ्यास कराना।
9. प्रयोग एवं अभ्यास के बाद विद्यार्थियों की वर्तनी सम्बन्धी सुधार का मूल्यांकन किया जाए और विद्यार्थियों को उनकी प्रगति से परिचित कराया जाए।
10. प्रत्येक कठिनाई या समस्या के लिए अलग–अलग नैदानिक पत्र तैयार हों।
11. वर्तनी लिखाने के साथ–साथ संबद्ध शब्द का उच्चारण कराकर भी अशुद्धि के संभाव्य कारण का सत्यापन किया जाना चाहिए।

गतिविधि आधारित शिक्षण

व्याकरण शिक्षा के लिए गतिविधि–आधारित शिक्षण एक जरूरत है, इसे स्वीकार किया जाता है और इसकी स्वीकृति पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित है। व्यावहारिक रूप में कक्षा–व्यवहार के रूप में इसका रूपांतरण नगण्य है। यह धारणा सामान्य हो गई है कि गतिविधि आधारित पठन–पाठन खर्चीला और ज्यादा समय लेने वाला होता है, जबकि उतने ही प्रभावी परिणाम के लिए पाठ्यपुस्तक आधारित पठन–पाठन से काम चल जाता है। साथ–ही यह धारणा भी आम है कि कार्यकलाप या गतिविधि आधारित पठन–पाठन, परीक्षाओं और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी को तैयार नही कर पाते। यह सच है कि कई विद्यालय हैं, जो समृद्ध भाषा प्रयोगशालाएँ विकसित नहीं कर सकते। लेकिन आसानी

से उपलब्ध संसाधन का उपयोग करते हुए कम खर्चीले कार्यकलाप व गतिविधियाँ किए जा सकते हैं। गतिविधि आधारित शिक्षण व्याकरण शिक्षण का आधार स्तंभ है। परीक्षाओं में सैद्धांतिक बातों पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इसलिए इसकी उपयोगिता नहीं समझी जाती। इसके लिए परीक्षा–व्यवस्था में सुधार की जरूरत है ताकि परीक्षाओं में कार्यकलापों को ज्यादा तरजीह दी जाए और इस बात से अवगत कराया जाए कि बच्चे सही अर्थों में व्याकरण शिक्षण कार्यकलापों के माध्यम से सीखते हैं।

गतिविधि और व्याकरण

संदर्भ का ही एक तरीका गतिविधि है। व्याकरण शिक्षण विद्यार्थियों में एक ऐसे आतंक की तरह उपस्थित होता है कि उनमें व्याकरण अध्ययन के प्रति भय पैदा होता है। विद्यार्थी जिस विषय से डर जाता है, उसे वह कभी ठीक से नहीं सीख सकता। अतः व्याकरण सीखते समय विद्यार्थी को निष्क्रिय श्रोता की जगह सक्रिय भागीदार बनाया जाए। जब विद्यार्थी गतिविधि के आलोक में सक्रिय होता है, तब उसके सीखने की योग्यता में बढ़ोतरी होती है। बच्चों को अगर गतिविधि के माध्यम से व्याकरण को सिखाया जाये तो वह जीवन भर व्याकरण को नहीं भूलेंगे।

कैसे करवाएँ गतिविधियाँ?

- बच्चों की आयु, रूचि, स्तर एवं कौशल के अनुसार गतिविधियों का संकलन करें।
- आयु अनुरूप गतिविधि को पहले पाठ्यक्रम से जोड़कर उस पर अपनी समझ बना लें, उसके बाद ही उसे कक्षा में करवाएँ।
- सभी गतिविधियों को करवाते समय यह ध्यान रखें कि इनको करवाने का उद्देश्य बच्चों में व्याकरणिक ज्ञान विकसित करना है, न कि मात्र कार्यकलाप कराना है, अतः उन्हें नियमित रूप से समय–समय पर गतिविधियाँ करवाएँ।
- गतिविधियों व खेलों को करवाते समय बच्चों का अवलोकन सतत रूप से करते रहें, जैसे – वे किस प्रकार सीख रहे हैं? कैसे कर रहे हैं? आदि का कार्यकलाप के दौरान ही पता चल सके और उन्हें आवश्यकतानुसार फीडबैक दिया जा सके।

बच्चों का लगातार अवलोकन और आकलन

शिक्षक हमेशा यह ध्यान रखें कि गतिविधियाँ कराते समय बच्चों का अवलोकन करना बहुत जरूरी है तथा साथ–साथ आकलन भी करें, जिसमें अध्यापक को यह पता चलता रहेगा कि बच्चे कैसे सीख रहे हैं? उन्हें कब मार्गदर्शन की आवश्यकता है और कब उन्हें स्वतंत्र छोड़ना है?
विद्यालय में कुछ गतिविधियाँ कराकर व्याकरण शिक्षण को रूचिकर बनाया जा सकता है, जो इस प्रकार हैं:–

1. **काव्य–पाठ के माध्यम से व्याकरण सीखना**

विद्यालय में कवि जयन्ती मनाई जाए और उस कवि की कविता का पाठ अध्यापक करें और उसकी व्याख्या भी करें, ताकि बच्चे कवियों में परिचित हो सकें, उनकी रचनाओं को जान सकें।

- **कवि सम्मेलन –** व्याकरण सीखने के लिए कवि सम्मेलन भी अच्छा आयोजन है। स्थानीय कवियों को बुलाकर नई–नई कविताओं का रसास्वाद किया जा सकता है।

- **कवि दरबार –** कवि दरबार व्याकरण सीखने का रूचिकर माध्यम है। इसमें बच्चे सूर, तुलसी, बिहारी इत्यादि कवियों की वेशभूषा में सुसज्जित आते हैं और वे संबंधित कवियों की कविताओं का पाठ करते हैं और उनके जैसे बनने की कोशिश करते हैं।

2. **अभिनय के माध्यम से व्याकरण सीखना**

हिन्दी व्याकरण शिक्षण में अभिनय का महत्तवपूर्ण स्थान है। अभिनय देखने से कथानक का अमिट प्रभाव विद्याथियों पर पड़ता है। पात्रों के मुख से स्पष्ट उच्चारण, आरोह, अवरोह, भाव भंगिमाओं को देख सुनकर विद्यार्थी व्याकरण के उचित व्यावहारिक रूप सीखते हैं।

3. **वाद–विवाद प्रतियोगिता**

वाद–विवाद प्रतियोगिता व्याकरण शिक्षण की महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ हैं। इसके माध्यम से विद्यार्थी वाचन कला में निपुण बन जाते हैं। साथ–ही उच्चारण में शुद्धता, विचारों की मौलिकता और वाणी में लोच और सजीवता आती है।

4. **सुलेख स्पर्धा**

शुद्धोच्चारण और सुलेख किसी भी भाषा के महत्त्वपूर्ण अंग है। विद्यालय में समय–समय पर सुलेख स्पर्धा या प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिए। सुन्दर लिखावट के नमूने और विजयी विद्यार्थी के सुलेख के नमूने का प्रदर्शन पूरी कक्षा के सामने करना चाहिए।

5. **अन्त्याक्षरी**

व्याकरण सीखाने के सर्वोत्तम क्रिया अन्त्याक्षरी है। बच्चों की क्रियाशीलता को जागृत करने, शुद्ध भाषा सिखाने, शब्द–भंडार को विकसित करने के लिए अन्त्याक्षरी का आयोजन महत्त्वपूर्ण है।

6. **कहानी के माध्यम से**

प्राथमिक कक्षा में बच्चों को व्याकरण के ज्ञान से अवगत कराने में कहानी की अहम् भूमिका होती है। कहानी के माध्यम से रूचि लेकर पाठ को सीखते हैं। कहानी सुनने के क्रम में बच्चे अपने अनुभवों को भी कहानी के माध्यम से जोड़ते चले जाते है। कहानी के माध्यम से बच्चे व्याकरण के उच्चारण वर्त्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर कर सकते हैं।

7. **चित्रों के माध्यम से**

प्राथमिक कक्षा में बच्चों को चित्रों में अधिक रूचि होती है। चित्र के माध्यम से व्याकरण का शिक्षण अधिक प्रभावकारी होती है। चित्र बच्चों का ध्यान आकर्षित करता है।

8. **मिलान खेल**

बच्चों की व्याकरणिक समझ को विकसित करने के लिए मिलान खेल बनाएँ। उदाहरण के तौर पर, कार्डों पर क, ख, च, ख, अ, आ, इत्यादि लिखें। फिर दूसरे कार्डों पर स्वर वर्ण, व्यंजन वर्ण बनाएँ। सभी कार्डों को मिला दें और बच्चों को कार्डों का मिलान करने को कहें।

9. क्या सही, क्या गलत

कागज के एक नाप के दस टुकड़े लें और प्रत्येक पर शुद्ध शब्द लिखें, जैसे – शाम, कवि, कैलाश, इत्यादि। इसी तरह कागज की अन्य पर्चियों पर दस अशुद्ध शब्द लिखें, जैसे – साम, कवी, कैलास, इत्यादि। अब सभी पर्चियों को मोड़ लें और एक छोटी टोकरी या थैली में डाल लें। बच्चों के छोटे–छोटे समूह बनाएँ और प्रत्येक बच्चे को एक–एक पर्ची उठाने के लिए कहें। अब बच्चे से उन पर्चियों को पढ़कर अपनी समझ से स्वयं निर्धारित करने दें कि कौन–सा शब्द सही है और कौन सा गलत? कक्षा में इस पर चर्चा करवाएँ।

10. बूझो मेरा एक्शन

यह खेल पूरी कला के साथ करवाएँ। पहले स्वयं कोई भी व्याकरण से संबंधित एक्शन, जैसे – खाने की क्रिया का एक्शन बिना बोले करें और सभी बच्चों को बताने को कहें कि आप क्या कर रहे थे? बच्चों के सही बताने पर ताली बजवाएँ। उसके बाद उस वाक्य में संज्ञा, क्रिया, सर्वनाम जैसे शब्दों का चयन करने के लिए कहें।

11. पर्ची निकालो और सीखो

पर्चियों पर सही–सही वाक्य लिखकर एक डिब्बे में रखें। बच्चों को बारी–बारी से एक पर्ची निकालने को कहें। एक बच्चा पर्ची पढ़ेगा और जो लिखा हो, वैसा अभिनय करेगा। बाकी बच्चे बताएँगे कि उस बच्चे ने जो अभिनय किया और जो उच्चारण किया, वह सही से किया या नहीं।

वर्तनी का तात्पर्य

वर्तनी का तात्पर्य है, वर्ण–विन्यास। किसी भी भाषा की ध्वनि वर्ण कहलाता है। वर्ण जब मुँह से बोला जाता है, तो उसे ध्वनि कहते हैं। ध्वनि का लिखित रूप वर्ण है। वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी की वर्णमाला देवनागरी कहलाती है। अधिकांश भाषा वैज्ञानिकों का यह मत है कि संसार की सभी प्रचलित लिपियों में देवनागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है और इसमें प्रायः जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है।

हमारे देश में लेखन की सुडौलता पर सदा ही बल रहा हैं। निःसंदेह ही लेखन में सुलेख का उतना ही महत्त्व है, जितना भाषण में सु–उच्चारण का। वर्तनीगत शुद्धता लिखित भाषा की शुद्धता का अनिवार्य अंग है। इसके अभाव में भाषा की शक्ति अपना महत्त्व खो देती है। अशुद्ध वर्तनी भाषा का एक विकृत रूप प्रस्तुत करती है और उसका प्रभाव उच्चारण, गठन तथा रचनागत अन्य रूपों पर पड़ता है। अतः वर्तनी की शिक्षा भाषा–शिक्षण का एक आवश्यक अंग है।

प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं को देखने से विदित होता है कि विद्यार्थी हिन्दी लिखने में वर्तनी की अनेक भूलें करते हैं। ये भूले कई कारणों से होती है। वर्तनी की शिक्षा के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली सामान्य त्रुटियों से परिचित हों और यथासंभव उन्हें दूर करने का प्रयास करें।

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ

1. सामान्य लिपि सम्बन्धी अशुद्धियाँ

- ष के स्थान पर प लिख देने की अशुद्धि, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
विपय	विषय
पट	षट्

- व के स्थान पर ब लिख देने की अशुद्धि, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
कबि	कवि
बिचार	विचार

- ठ के स्थान पर ट लिख देना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
षष्ट	षष्ठ
पृष्ट	पृष्ठ

- द्य के स्थान पर ध्य अथवा ध लिख देना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
विध्यमान	विद्यमान
मध	मद्य

- भ के स्थान पर म लिख देना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
मक्ति	भक्ति
तमी	तभी

- श, ष तथा स की अशुद्धि, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
मनुश्यता	मनुष्यता
शंकट	संकट
कैलास	कैलाश

2. अनुस्वार सम्बन्धी अशुद्धियाँ

- अनुस्वार का न लगाना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
नही	नहीं
मै	मैं

- अनुस्वार को बाद के वर्ण पर लगाना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
उन्होंने	उन्होंने

अंकित	अंकित

- हलन्त न लगाना

अशुद्ध	**शुद्ध**
अर्थात	अर्थात्
पश्चात	पश्चात्

3. मात्राओं की अशुद्धियाँ

- मात्राधिक्य – आवश्यकता न होने पर भी मात्रा लगा देना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
आधीन	अधीन
अनेकों	अनेक

- मात्रा का अभावः– आवश्यकता होने पर मात्रा न लगाना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
गृहणी	गृहिणी
क्रया	क्रिया

- मात्रा को उलट–फेर कर लगा देना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
रचियता	रचयिता
प्रायिश्चत	प्रायश्चित

4. अक्षरों की अशुद्धि

- अक्षर विपर्यय – अक्षर को उलटकर रख देना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
मतबल	मतलब
ब्राम्हण	ब्राह्मण

- अक्षरागम – अधिक अक्षर लगा देना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
बुद्धवार	बुधवार
बेफजूल	फजूल

- अक्षर–लोप – अक्षर का लोप हो जाना, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
चित	चित्त
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य
कवित्री	कवयित्री

- विसर्ग का लोप, जैसे –

अशुद्ध	**शुद्ध**
दुख	दुःख
शनै–शनै	शनैः शनैः

5. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के निम्न कारण हैंः–

- विद्यर्थियों के उच्चारण का अशुद्ध होना।
- लिखने में शीघ्रता करना।
- क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव।
- माताओं का ठीक से ज्ञान न होना।
- शब्द–लाघव की प्रवृत्ति।
- शारीरिक विकार।
- लिखते समय मन की अशान्ति।

वर्तनी की अशुद्धियों के उपर्युक्त कारणों को मुख्य रूप से दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता हैः–

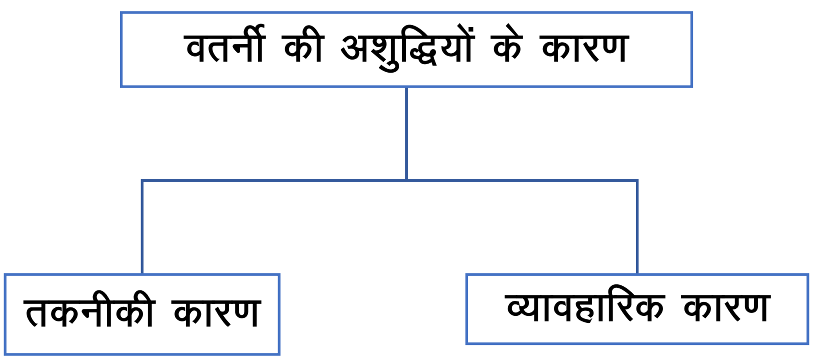

1. लिपि के सही ज्ञान का अभाव
2. संशोधन कार्य का अभाव
3. उच्चारण वैषम्य
4. प्रयोगकर्त्ता की असावधानी
5. संयुक्ताक्षरों का प्रयोग
6. अभ्यास का अभाव
7. व्याकरणिक रूपों की अनभिज्ञता
8. वातावरण का प्रभाव
9. कुछ शब्दों में वर्तनीगत सर्वमान्य
10. एकरूपता का अभाव

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का निराकरण/या सुधारने के उपाय

वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारणों को दूर करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैंः–

1. कक्षा में अध्यापक द्वारा शुद्ध उच्चारण कराना।
2. विद्यार्थियों से वर्ग में शुद्ध उच्चारण कराना।
3. बच्चों को सुलेख का अभ्यास कराना।
4. कक्षा में अधिकाधिक खड़ी बोली का प्रयोग करना।
5. विद्यार्थियों को लेखन कार्य देना और उसका बड़ी सावधानी से संशोधन करना।
6. विद्यार्थियों द्वारा अशुद्ध लिखे गये शब्दों का बार–बार अभ्यास कराना।
7. मुद्रण की अशुद्धियों का यथासम्भव संशोधन कराना।
8. श्रुतिलेख का समय–समय पर अभ्यास कराना।
9. प्रयोग एवं अभ्यास के बाद बालकों की वर्तनी सम्बन्धी सुधार का मूल्यांकन किया जाए
10. विद्यार्थियों को उनकी प्रगति से परिचित कराया जाए।
11. प्रत्येक कठिनाई या समस्या के लिए अलग–अलग नैदानिक पत्र तैयार हों।
12. वर्तनी लिखाने के साथ–साथ संबद्ध शब्द का उच्चारण कराकर भी अशुद्धि के संभाव्य कारण का सत्यापन किया जाना चाहिए।

- पुस्तकों में मुद्रण की अशुद्धियाँ
- व्याकरिणक नियमों के ज्ञान का अभाव
- लिखने में असावधानी।
- लिपि में समुचित ज्ञान का अभाव

इकाई–4

हिन्दी शिक्षण में आकलन

भाषा शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन का आशय उन प्रक्रियाओं से हैं, जिनकी सहायता से एक शिक्षक विद्यार्थियों की भाषा संबंधी समस्या कौशलों के संबंध में शिक्षण अवधि के दौरान एवं पाठ्यक्रम की समाप्ति पर निर्णय करता है। आकलन एक ऐसा साधन है, जो बच्चों एवं शिक्षक दोनों के लिए उपयोगी है। आकलन से एक तरफ बच्चे की क्षमता, उम्र, स्तर, आवश्यकता और सीखने की गति इत्यादि को ध्यान में रखते हुए यह जानने का प्रयास किया जाता है कि कौन–सा बच्चा क्या कर सकता है? अभी उसका सीखने में स्तर कैसा है? दूसरी तरफ शिक्षक को यह मदद मिलती है कि किस बच्चे के साथ किस तरह का कार्य करना है?

आकलन का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि शिक्षक को यह पता चले कि उसके पढाने में कहाँ कमी रह गई है और अब उसे क्या करना चाहिए? एक विद्यार्थी की स्वयं की पिछली प्रगति से वर्तमान तक में क्या बदलाव आया है? क्या प्रगति हुई है? उसको जान सके। आकलन शिक्षक या माता–पिता को यह बताने वाला हो कि बच्चे की क्या जरूरते हैं? उसके आधार पर किस प्रकार से उसके लिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में बदलाव लाया जाए।

आकलन शब्द से सामान्यतया यह अर्थ लगाया जाता है कि विद्यार्थी पास हुआ है या फेल? कितने अंक आये हैं? लेकिन वास्तव में इतना सीमित दायरा इसका नही है। आकलन में बच्चों की उपलब्धि के स्तर से अधिक यह जाननें का प्रयास किया जाता है कि सीखना–सिखाना प्रभावी बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, भाषा शिक्षक जब आकलन करना चाहता है तो वह देखना चाहता है कि विद्यार्थी कितना पढ़ पाता है? भाषा को सुनकर कितना समझता है? कितने आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कह पाता है। लिखित रूप में अपनी अभिव्यक्ति कर पाता है इत्यादि। आकलन सीखने की गति को गहराई से समझ बनाने में मदद करता है, जैसे – कोई विद्यार्थी ठीक से पढ़ नहीं पा रहा है, तो उसकी वजह क्या है? क्या कुछ अक्षरों को पहचानने में कमजोर है? या शब्दों और वाक्यों को एक सार्थक इकाई के रूप में पढ़ने की आदत नहीं पड़ सका है? आदि यह जानकारी हमारे लिए उपयोगी है।

इससे विद्यार्थियों को समझने में मदद मिलती है। आकलन के दौरान प्रत्येक बच्चे के बारे में विवरणात्क टिप्पणी लिखना जरूरी है। टिप्पणी का आधार स्पष्ट होना चाहिए। प्रत्येक टिप्पणी की पुष्टि ऐसे उदाहरण से हो, जो आकलन के दौरान देखा गया है।

विचारणीय प्रश्न।

- आकलन के दौरान क्या ध्यान में रखना चाहिए?
- आकलन की प्रक्रिया छात्र–केन्द्रित क्यों होनी चाहिए? इसके क्या लाभ है?

- आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से किस प्रकार जुड़ा है? अपना विचार लिखिए।

हिन्दी भाषा में सतत् और समग्र आकलन की संकल्पना

हम सभी जानते हैं कि बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (RTE अधिनियम–2009) अप्रैल, 2010 से लागू किया जा चुका है। अधिनियम के अनुसार CCE को प्रत्येक बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा पूरी होने तक लागू किया जाए। अतः RTE अधिनियम को इसकी मूल भावना में क्रियान्वित करने के लिए सतत और समग्र मूल्यांकन एक अनिवार्य आवश्यकता हैं। CCE को लागू करने में शिक्षक एक केन्द्रित भूमिका निभाते हैं। क्षेत्र के अनुभवों और शिक्षकों के साथ बातचीत से यह पता चलता है कि शिक्षक आकलन को, जो सतत व समग्र मूल्यांकन का आवश्यक घटक है, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के साथ समावेशित करने के साथ स्थान पर आकड़ों का संकलन करने व बच्चों की जाँच के परिणामों के रिकार्ड रखने में अपना पूरा समय लगा देते हैं।

RTE अधिनियम कक्षा आठवीं तक सभी सार्वजनिक परीक्षाओं को निषेध करता है। RTE के दृष्टिकोण को पूरा करने में CCE सभी बच्चों का सीखना सुनिश्चित करके एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान किया जाने वाला आकलन बच्चों के सीखने में किसी भी तरह के सुधार के लिए आवश्यक फीडबैंक(पृष्टपोषण) प्रदान करेगा। इस प्रकार CCE बच्चों की शिक्षा से जुड़े सभी लोगों को बच्चे की स्वयं की प्रगति के साथ–साथ उसकी उपलब्धियों पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

हिन्दी भाषा में आकलन और मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य बच्चों के सीखने में सुधार लाना है ताकि वे प्रगति कर सकें और उनका संपूर्ण विकास हो सके। सीखने–सिखाने के दौरान किये गये आकलन से उसके बारे में एकत्र की गई जानकारी शिक्षक को किसी भी विषय में बच्चों की क्षमताओं और सीखने में कमी की पहचान करने में सहायक होती है। यह शिक्षकों को बच्चों की जरूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम व सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को ढालने में मदद करता है। ये यह भी दर्शाने में सहायक सिद्ध होता है कि बच्चों ने पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को किस सीमा तक प्राप्त किया है।

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान किये गये सतत् आकलन हमें संकेत देते हैं कि बच्चों के सीखने में कहाँ–कहाँ कमी रह गई है, जिसके आधार पर सीखने में सुधार के लिए शिक्षक उचित समय पर आवश्यक कदम उठा सकते हैं। साथ–साथ यह पता लगाने में भी कि बच्चों को सीखने में कहाँ कठिनाई हो रही है, और कहाँ उन्हें विशेष मदद की जरूरत है? सतत आकलन (जिसे आमतौर पर संरचनात्मक आकलन भी कहा जाता है, जो सभी बच्चों को एकसाथ और एक–ही समय में दिये जाते हैं। सतत् आकलन में तो बच्चों को इस बात का पता भी नहीं चलता कि उनका आकलन किया जा रहा है। इस प्रकार सतत आकलन का अर्थ बहुत जल्दी–जल्दी औपचारिक परीक्षण देना नहीं है।

संरचनात्मक शब्द संरचना शब्द से जुड़ा है, अर्थात्, सीखने की प्रक्रिया की संरचना। यह आकलन सीखने–सिखाने के दौरान बच्चों की प्रगति का निरीक्षण और उसमें सुधार लाने के लिए बनाया गया है। इसे सीखने का आकलन भी कहा जाता है। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे के सीखने के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी, उदाहरण के लिए, लिखित कार्य, मौखिक उत्तर या केवल बच्चों की गतिविधियों का अवलोकन इत्यादि का प्रयोग संरचनात्मक रूप से बच्चों के सीखने में सुधार के लिए उपयोग में लाई जानी चाहिए।

सतत् और समग्र आकलन के दूसरे घटक समग्र आकलन का अर्थ बच्चों के सर्वांगीण प्रगति के बारे में जानकारी से है। सीखने–सिखाने के संदर्भ में प्रगति एकल रूप में नही हो सकती है, जैसे – संज्ञानात्मक पहलू, कौशल वैयक्तिक एवं सामाजिक गुण इत्यादि। एक अध्याय या विषय क्षेत्र के पूरा होने पर शिक्षक यह जानता चाहता है कि बच्चों ने उसकी अपेक्षा अनुसार अधिगम उपलब्धि प्राप्त कर ली है या नही। इसके लिए वह पाठ के उद्देश्यों की पहचान कर सीखने के संकेतक निर्धारित करता है। शिक्षक इन आपेक्षित संकेतकों के अनुरूप कुछ क्रियाकलापों द्वारा शिक्षक बच्चों का आकलन करेंगे और यह एक प्रकार का समेकित आकलन होगा। ये आकलन संबंधी आकड़ों को शिक्षक दर्ज (रिकार्ड) करेंगे। इस प्रकार एक तिमाही में शिक्षक द्वारा आकलन के विविध प्रकार के आकड़े, बच्चों के विविध पहलुओं के बारे में एकत्र हो जायेंगे। ये आंकड़े यह बताएँगे कि बच्चों के समूह ने किस प्रकार का कार्य किये हैं और व्यक्तिगत रूप से काम करते समय उसमें क्या तरीके हैं, जैसे – पेपर, पेंसिल, परीक्षा देते समय, चित्र बनाते समय, चित्र पढ़ते समय, मौखिक अभिव्यक्ति के समय, कविता गीत की रचना के समय इत्यादि। ये आंकड़े बच्चों के सीखने के साथ–साथ उनके व्यवहार के और सभी पहलुओं का आकलन करने में तो मददगार होंगे ही, साथ–साथ बच्चों के अधिगम (सीखने) व विकास की एक समग्र तस्वीर भी प्रस्तुत करेंगे।

आकलन मूल्यांकन की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रमाण एकत्र करने का एक माध्यम है। आकलन का अभिप्राय अंतिम निर्णय से नहीं है बल्कि यह एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रेक्षणों (आंकड़ों) के मध्य तुलना की जाती है।

आकलन का प्रयोजन निश्चय ही सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का बदलाव करना है और उन लक्ष्यों पर पुर्नविचार करना है जो विद्यालय के विभिन्न चरणों के लिए तय किये गए हैं। यह बदलाव इस आधार पर किया जा सकता है कि शिक्षार्थियों की क्षमता किस हद तक विकसित हुई। यह कहने की जरूरत नहीं होनी चाहिए कि यहाँ आकलन का मतलव विद्यार्थियों का नियमित परीक्षण कतई नहीं है। शिक्षा का सरोकार एक सार्थक और उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है। इस तरह मूल्यांकन को आलोचनात्मक प्रतिपृष्टि (फीडबैक) देने का उपकरण बनाना चाहिए। यह तभी संभव है जब आकलन की प्रक्रिया निर्देश आदि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के साथ–साथ चले।

बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 के अनुसार आकलन एवं मूल्यांकन की सतत प्रणाली से ही सच्चे और प्रभावकारी तौर पर शिक्षण अधिगम रणनीतियों में सुधार लाया जा सकता है और वह भी तब जब अध्यापक परिणामों की व्याख्या करने में सक्षम हो और इसके आलोक में रणनीतियों को पुननिर्मित करे। उल्लिखित उदाहरण यह स्पष्ट करता है कि आकलन सीखने के उपकरण (learning Tool) और उपाधि स्तर जानने के उपकरण (Testing Toll) के रूप में साथ–साथ कार्य करता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन – मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चों के विकास व सीखने में परिर्वतन का पता लगाया जाता है। सही नतीजों तक पहुँचने के लिए विश्वसनीय व वैद्य प्रमाणों पर आधारित होना चाहिए। एक अच्छा मूल्यांकन वह है जो किसी बच्चे की सभी उपलब्धियों की पूरी तस्वीर पेश करे और विभिन्न स्रोतों पर आधारित हो।

प्रायः आकलन और मूल्यांकन इन दोनों शब्दों को एक–दूसरे की जगह इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन इन दोनों के उद्देश्य सीखने के दौरान बच्चों की उपलब्धि की गुणवत्ता को परखना है। मूल्यांकन का

केन्द्र सीखने–सिखाने की निश्चित अवधि के बाद बच्चों के वास्तविक उपलब्धि स्तर को जाँचना है। बिना यह जाने कि बच्चों ने क्यों और कैसे यह स्तर प्राप्त किया है, इस प्रकार मूल्यांकन एक निर्धारित मानदंड के आधार पर बच्चों के कार्य की गुणवत्ता की जाँच करनी है, और उसके गुणवत्ता को स्थापित करने के लिए उस स्तर को एक मूल्य विशेष देना है, जैसे – अंक अथवा ग्रेड। इस लिए इसे सीखने का आकलन अथवा समेकित आकलन भी कहा जाता है। आकलन प्रक्रिया–आधारित है और मूल्यांकन उत्पाद–आधारित।

बच्चों के आकलन की प्रक्रिया कोई पृथक गतिविधि न होकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। बच्चे की प्रगति के लिए आवश्यक है कि मूल्यांकन की प्रक्रिया बाल–केन्द्रित हो, कक्षा में पायी जाने वाली विविधता को समझने वाली हो, आवश्यकता के अनुसार लचीली तथा सीखने की गति हर बच्चे की आयु, शैली और स्तर के अनुसार चलने वाली हो। यहाँ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ यह कदापि नहीं है कि बच्चों की वार्षिक अर्ध–वार्षिक और सत्र परीक्षाओं के अतिरिक्त मासिक, पक्षिक या साप्ताहिक परीक्षाएँ ली जायें। बच्चे के विकास का सतत् मूल्यांकन सामयिक घटना नहीं होती वरन यह शैक्षिक सत्र की समूची अवधि में लगातार चलती है। दूसरी ओर इस व्यापक शब्द का आशय आकादमिक प्रगति के साथ–साथ बच्चे के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और सामाजिक विकास की भी जानकारी प्राप्त करना है। मूल्यांकन में सतता के साथ–साथ व्यापकता का तत्व सामाहित किए बिना बच्चों के सर्वागीण विकास के लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव नहीं है। शिक्षार्थी के समग्र विकास को केन्द्र–बिन्दु मानकर आकलन के निम्न तस्वीर के माध्यम से समझा जा सकता है।

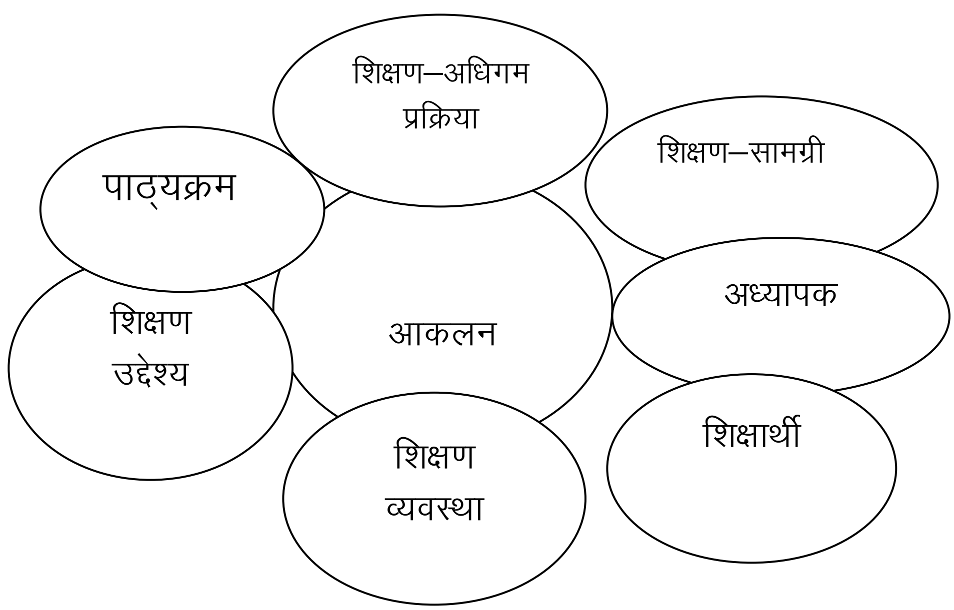

ऊपर के ग्राफिक से स्पष्ट हो रहा हो कि आकलन बहुमुखी है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आकलन एवं मूल्यांकन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, सामग्री इत्यादि में अपेक्षित बदलाव हेतु इनसे प्राप्त पृष्टपोषण की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इनके लिए किसी विशेष परिस्थिति को पैदा करने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि आकलन एवं मूल्यांकन दोनों ही अधिगम की स्वभाविक प्रक्रिया में ही होने चाहिए। आकलन करते समय दो बातों को हमेशा ध्यान में रखना आवश्यक होगा कि शिक्षार्थी का आकलन, उसके पूर्व की प्रगति और उम्र सापेक्ष तय किए गए मापदंड की तुलना में होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि सभी बच्चों के लिए पर्याप्त मात्रा में भौतिक और मानवीय संसाधन सुनिश्चित किए जायें। ऐसी स्थिति में किसी बच्चे का आकलन करना अधिक तार्किक और न्याय संगत होगा। इसके लिए आवश्यक है कि समय–समय पर शिक्षार्थियों की विकसित होती क्षमताओं एवं कौशलों आदि का दस्तावेजीकरण किया जाय।

विचारणीय प्रश्न

- हिन्दी भाषा में आकलन और मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
- आकलन मूल्यांकन की जरूरतों को पूरा करने का एक माध्यम है। कैसे?
- आकलन और मूल्यांकन में अन्तर स्पष्ट करें?

भाषा आकलन के विभिन्न तरीके

भाषा में आकलन के बिन्दु – आकलन की बात की जाए तो हमें प्राथमिक स्तर पर प्रवाह पर ध्यान देने की जरूरत है। उसके बाद शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए। प्राथमिक स्तर के बाद हमें शुद्धता एवं प्रवाहिता का संतुलन रखते हुए दोनों पर ध्यान देना जरूरी है।

हम यह जानना चाहते हैं कि शिक्षक ने भाषा में कौन–कौन से कौशल प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को बार–बार अलग–अलग तरह के मौके दिए गए है या नही। यहाँ पर कौशलों को समझने के लिए अलग–अलग बिन्दुवार विभाजन कर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। गतिविधियों के दौरान जब आकलन करे तो जरूरी नहीं है कि भाषा के हर कौशल के लिए अलग–अलग गतिविधि कराएँ। एक ऐसी गतिविधि भी चुनी जा सकती है जिससे तीन चार या अधिक कौशलों का आकलन किया जा सकता है। प्रमुख कौशल इस प्रकार हैं:–

- **सुनना और बोलना** – जब बच्चे पहली बार विद्यालय आते हैं तो काफी दिनों तक उन्हें वर्णमाला, प्रार्थना, कविता, गिनती, पहाड़ा इत्यादि कराया जाता है। शिक्षक की यह अपेक्षा रहती है, बच्चे बार–बार दोहराकर उन्हें याद कर लेंगे। इस तरह के दोहराव कराने के पीछे आम धारणा यह रहती है कि बार–बार एक ही ध्वनि सुनने और दोहराने से बच्चे उसे सीख जाते हैं, पाठ उन्हे याद हो जाता है। यह धारणा इस निष्कर्ष को मान्यता देती है कि बिना सुने बच्चा नये शब्द सीखता है, मतलब बच्चा पहले सुनता है और फिर बोलता है। जबकि दोनों प्रक्रियाएँ अलग हैं, सुनने बोलने में महत्त्वपूर्ण हैं। समझने के साथ–ही किसी संवाद को आगे बढ़ा सकते हैं। दरअसल सुनना–बोलना दोनों साथ–साथ चलने वाली प्रक्रिया है, इसलिए भाषा सीखने में इन दोनों को अलग करके नही देखा जा सकता।
- **पढ़कर समझना** – इस कौशल के शुरूआती चरण में अक्षर पहचान से लेकर अर्थ ग्रहण करने तक की क्षमता का आकलन किया जाता है। विद्यार्थी परिचित शब्दों नामों को शब्द कार्ड में पहचान पाएँ। पढ़ी हुई सामग्री की मुख्य बात बता पायें।

- **लिखना** – लिखना शब्द संस्कृत के लिख धातु से निष्पन्न हैं। जिसका अर्थ निपुणता से संबंधित है। कौशल शब्द संस्कृत के कुशल शब्द से बना है। जिसका अर्थ कुशलता एवं निपुणता से संबंधित है। इस प्रकार लेखन के कौशल का एकीकृत अर्थ लिखने की निपुणता एवं दक्षता से है। लिखना, बोलना एवं सुनना अभिव्यक्ति के ही साधन है। यदि अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि हम अपनी भाषा को विचारों को जैसे बोलकर अभिव्यक्त करते हैं, उसी प्रकार लिखकर भी अपने भाषा, विचारों को व्यक्त करते हैं।

अभिव्यक्ति

इसके अन्तर्गत विद्यार्थी देखी हुई चीज या चित्र के समान चित्र बना पाएँ। इसके बाद स्वतंत्र चित्र बना सके। बच्चें कविता, कहानी, परिचित घटना स्थिति का अभिनय कर सके , आदि का आधार आकलन किया जा सकता है।

आकलन के विभिन्न तरीके

आकलन के चार मूलभूत तरीके हैं:–

i. **व्यक्तिगत आकलन** – यह आकलन शिक्षार्थी विशेष को केन्द्र में रखकर किया जाता है।

ii. **सामूहिक आकलन** – कक्षा के सभी या छोटे–बड़े समूह में बँटे शिक्षार्थियों के कार्य व्यवहार सहयोग नेतृत्व आदि का आकलन किया जाता है।

iii. **स्व आकलन** – उसमें शिक्षार्थी द्वारा स्वयं के सीखने से संबंधित आकलन किया जाता है।

iv. **सहपाठियों द्वारा आकलन** – उसमें शिक्षार्थी परस्पर एक–दूसरे का आकलन करते हैं।

आकलन के उपकरण और तकनीकें

1. **मौखिक आकलन**

यह भाषायी कौशल के आकलन का बहुत ही सरल और सटीक तकनीक है। विद्यालय में औपचारिक या अनौपचारिक गतिविधियों के आयोजन के क्रम में शिक्षार्थियों के संवाद कौशल, अभिनय कौशल आदि का आकलन किया जा सकता है।

i. प्रश्न–उत्तर–सत्र – इसके अन्तर्गत बच्चों से सवाल–जबाव किए जाते हैं। शुरूआत के प्रश्न एक–दो शब्द के उत्तर वाले होने चाहिए जिससे सभी बच्चे भाग ले सकें। प्रश्न दिनचर्या और उसके अनुभव रूचि, आवश्यकता इत्यादि से संबंधित हो सकते हैं।

इस गतिविधि में अवलोकनकर्ता द्वारा विद्यार्थियों को अपनी बात कहने का पर्याप्त समय देना आवश्यक है। शिक्षक को अच्छे प्रश्न बनाने एवं पूछने की कला में दक्ष होना चाहिए। इस प्रश्न–उत्तर सत्र से विद्यार्थियों के शब्द–भण्डार, उच्चारण और वाक्य निर्माण की क्षमता इत्यादि का आकलन संभव है।

ii. कहानी क्षमता – कहानियॉ सुनना–सुनाना प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा सीखने में बहुत मदद करती है। कहानी सुनना बच्चों के लिए रूचिकर होने के साथ–साथ उनकी सृजनात्मकता को भी बढ़ाने वाला होता है। विद्यार्थी पढ़ी या सुनी हुई कहानियों को अपने

शब्दों में सुना पाए या स्वरचित कोई कहानी सुना पाए। इन दोनों–ही बातों को ध्यान में रखकर आकलन किया जाता है। इसके अतिरिक्त हाव–भाव के साथ कहानी, कहानी के घटनाक्रम को याद रखना भी जरूरी है।

iii. बोलकर पढ़ना – भाषा संबंधी आकलन की पारंपरिक विधियों में यह विधि आज भी समीचीन है और प्रासंगिक है। इसके द्वारा शिक्षार्थी के पठन कौशल के साथ–साथ उच्चारण विराम चिन्हों का सटीक प्रयोग भावाभिव्यक्ति आदि का सफल आकलन किया जा सकता है।

अ. वर्णन करना – वर्णन करना प्राथमिक कक्षा के शिक्षार्थियों के मौखिक आकलन का एक कारगर तरीका है। इसमें देखी–सुनी या पढ़ी बातों का वर्णन करना भी भाषायी कौशल का द्योतक है।

आ. प्रस्तुति और अभिनय – प्रस्तुति में अपनी बात रखने के तरीके, संवाद–कौशल और उसकी प्रभावोत्पादकता विषय की समझ आदि का आकलन किया जा सकता है। अभिनय में शिक्षार्थी के संवाद कौशल के तहत बालाघात, अनुतान, शारीरिक भाषा, हाव–भाव इत्यादि का आकलन किया जाता है।

2. अवलोकन

अवलोकन द्वारा चर्चा करना, अभिनय, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, समूह में संवाद, चित्र पढ़ना इत्यादि गतिविधियों का औपचारिक या अनौपचारिक अवलोकन का महत्त्वपूर्ण अंग बन जाता है। अवलोकन कक्षा के अंदर या बाहर किसी–भी स्थान पर कभी भी किया जा सकता है। इसके द्वारा हम शिक्षार्थी के व्यवहार, रूचि, चुनौती इत्यादि के बारे में जानकारी इकट्ठा करते हैं। अवलोकन में पूर्वाग्रह से सर्वथा बचने की आवश्यकता है।

3. लिखित आकलन

लिखित आकलन सिर्फ लेखन का आकलन नहीं है। इसके द्वारा पढ़ना, समझना, ग्रहण करना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति देना आदि का आकलन किया जाता है। आकलन हेतु जिस उपकरण का प्रयोग किया जा रहा है वह कल्पनाशीलता का पोषण करनेवाला अनुभव आधारित उत्तरों का पोषण करने वाला एवं विश्लेषण क्षमता को बढ़ाने वाला हो।

प्राथमिक कक्षाओं में लिखित आकलन हेतु श्रुतिलेख भी जाँच उपकरण के रूप में प्रयुक्त होता है। यह बच्चे की स्मृति और मात्राओं,वर्तनी आदि की जाँच नही बल्कि समग्र भाषिक निपुणता क्षमता की जाँच में सहायक है।

4. पोर्टफोलियो

पोर्टफोलियो का उद्देश्य शिक्षार्थी के लिए किए गए कार्य के चुने हुए हिस्सों का संकलन होता है। पोर्टफोलियो किसी भी बच्चा/बच्ची के क्रमिक विकास का सबसे प्रमाणिक रिकार्ड उपलब्ध कराता है। यह स्वमूल्यांकन करने के कौशलों के परिपालन का एक प्रभावी उदाहरण सिद्ध हो सकता है जो विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित करता है। एक समायावधि में एक कालांश या पूरे विद्यालय सत्रांत संकलित कार्य के आकलन हेतु पोर्टफोलियो का उपयोग विशेषकर रचनात्मक मूल्यांकन करने में प्रभावकारी हो सकता है।

पोर्टफोलियो निर्माण के समय कुछ सावधानी बरतने की आवश्यकता होगी। पोर्टफोलियो में रिकार्ड सम्मिलित करने से पूर्व उसका औचित्य पर विचार करना होगा। सभी कागजात/वस्तुएँ शामिल करने से पोर्टफोलियो निरर्थक एवं कागजों का बंडल बनकर रह जायेगा।

5. जाँच सूची

जाँच सूची विद्यार्थियों से संबंधित विशेषताएँ, व्यवहार तथा घटना विशेष की उपस्थिति के बारे में अवलोकन करके उसके आधार पर विश्लेषण करने का दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह शिक्षक को शिक्षार्थी के उन कौशलों की जाँच करने में सहायता करता है जिनमें उन्हें और प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। शिक्षार्थी के अधिगम के जिन हिस्सों का आकलन करना है, उससे संबंधित प्रश्नावली तैयार रहती है। शिक्षार्थी का अपना जबाव हाँ/ना में देना होता है।

6. रेटिंग स्केल

रेटिंग स्केल एक यंत्र है, जिसमें निर्धारित किये जाने वाली वस्तु को संख्यांक निर्दिष्ट किया जाता है। रेटिंग स्केल भी एक तरह से जाँच सूची के समान है लेकिन इसका इस्तेमाल तब करते हैं, जब सूक्ष्म विवरण की आवश्यकता पड़ती है। इसके निर्धारण किए जा रहे वस्तु के गुणस्तर को सूचित करना होता है। इसे हम निम्न उदाहरण द्वारा समझा सकते हैं:–

मौखिक आकलन (पाँच बिन्दुओं वाला रेटिंग स्केल)

विवरण	1	2	3	4	5
प्रवाह				√	
शब्द संपदा			√		
संरचना				√	
अभिव्यक्ति					√

ऊपर के उदाहरण में शिक्षार्थी का प्रवाह में रेटिंग 4, शब्द संपदा में 3, संरचना में 4 तथा अभिव्यक्ति में 5 है जो उसके स्तर की जानकारी दे रहे हैं। शिक्षार्थी सभी क्षमताओं में रेटिंग 5 प्राप्त करेगा वह सबसे योग्य होगा।

विचारणीय प्रश्न

- आकलन के मूलभूत तरीके कौन–कौन हैं?
- मौखिक आकलन के कौन–कौन से साधन हैं?
- पोर्टफोलियो आकलन में प्रभावी भूमिका अदा करता है। कैसे?

स्रोत – राज्यकीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद पंजाब

सीखने के संकेतकों की समझ

सीखने के संकेतक का अभिप्राय जानने से पूर्व संकेतक का अर्थ जान लेना आवश्यक हो जाता है। संकेतक का अर्थ है – चिह्न सूचक अर्थात्, जो किसी विशेष कार्य अथवा बात की ओर इशारा करे। दूसरे शब्दों में, सीखने के संकेतक शिक्षण–अधिगम (सीखने–सिखाने) प्रणाली एवं सीखने की प्रक्रिया में आई प्रगति के चिह्न रूप है।

वैसे तो सीखना जीवन भर चलने वाली एक सतत् प्रक्रिया है। निरक्षर व्यक्ति भी अपने अनुभवों से ऐसा ज्ञानी बन जाता है, जो जगत भर की पोथियाँ पढ़ने वाला नहीं बन पाता, किन्तु जहाँ बात औपचारिक शिक्षा पद्धति में शिक्षण–अधिगम प्रणाली की आती है, वहाँ यह आवश्यक हो जाता है, चाहे इस लक्ष्य को पाने की प्रक्रिया भिन्न–भिन्न हो। विद्यालय स्तर की बात करें, तो शिक्षण अधिगम (सीखने–सिखाने) की प्रक्रिया के केन्द्र में विद्यार्थी होता है। विषय–वस्तु अध्यापक केवल मार्गदर्शक अथवा सहायक का कार्य करता है। सीखना बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उस प्रवृत्ति को दिशा देना समाज, शिक्षक वर्ग का कार्य है। इस लिए सीखने के संकेतकों का निर्धारण करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

i. संकेतक विद्यार्थियों की आयु–स्तर और आवश्यकता के अनुरूप हो।
ii. संकेतकों का विद्यार्थियों के परिवेश से कोई विरोध न हो।
iii. संकेतक और पाठ्यक्रम आपस में समायोजित हो।
iv. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया अथवा महौल विद्यार्थियों की रूचि, मनोविज्ञान एवं आवश्यकता के अनुकूल हो। इसलिए अध्यापक को अपने ढ़ग से परिस्थिति की माँग के अनुसार सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को आयोजित करने की पूर्ण स्वतंत्रता हो।
v. संकेतकों के निर्धारण के समय समावेशी कक्षा के माहौल को यकीनी बनाया जाए।

इन बातों को ध्यान में रखकर ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी) ने निम्न बिन्दुओं को साथ लेकर सीखने के संकेतकों की चर्चा की हैः–

1. पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ।
2. परिवेशीय सजगता।
3. सीखने के तरीके तथा माहौल।

भाषा के संबंध में सीखने के संकेतकों पर बात करने से पूर्व उपर्युक्त तीन बिन्दुओं पर विचार कर लेना आपेक्षित है।

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं से अभिप्राय ऐसे पाठ्यक्रम के नियोजन से है, जो विद्यार्थियों का अधिगम के एक नियत स्तर को पाने में सहायता कर सके। संकेतक एवं पाठ्यक्रम एक–दूसरे से पूर्णतया संबंध है। वस्तुतः जैसा संकेतक होगा वैसा ही पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को दिया जाएगा, वैसा–ही वे सीख पाएँगे। इसलिए अभीष्ट संकेतकों का निर्धारण अभीष्ट पाठ्यक्रम की अपेक्षा रखता है। परिवेशीय सजगता सीखने के संकेतकों को नियत करने में महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है। इच्छित संकेतकों को पाना तब तक असंभव है, जब तक निर्धारित पाठ्यक्रम को बच्चों तक पहुँचने की प्रक्रिया अथवा माहौल सुखद एवं

बच्चों के अनुकूल नहीं होगा। इसलिए सीखने की इच्छा पैदा करने के लिए ऐसा माहौल तैयार करना आवश्यक है, जो शिक्षार्थी को स्वयं ही पढ़ने–सीखने के लिए उत्साहित कर सके।

भाषा और सीखने के संकेतक

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा के द्वारा ही हम कुछ कहते और लिखते हैं एवं किसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढ़ते हैं। औपचारिक शिक्षा पद्धति में भाषा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शिक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण है। भाषा व्यक्ति के आत्मविश्वास और विकास की कुंजी है। भाषा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अहम अंग है। इसके बिना अन्य विषयों के शिक्षण का कोई औचित्य नही है।

जब हम शिक्षण–अधिगम स्तर पर भाषा की बात करते हैं, तो हमारी दृष्टि भाषा के चारों कौशलों पर आकर स्थिर हो जाती है। भाषा के चार कौशल है – सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा के ये कौशल आपस में जुड़े हुए हैं।

पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ

सुनना और बोलना

- हिन्दी अध्यापक की बातों/निर्देश को ध्यान से सुनना।
- हिन्दी में कहीं जाने वाली बातों को ध्यान से सुनना।
- छोटी–छोटी कविताओं, कहानियों को आनंदपूर्वक सुनना और कठंस्थ करना।
- हिन्दी ध्वनियों को आनंदपूर्वक सुनना और कठंस्थ करना।
- मात्रा रहित दो, तीन, चार अक्षरों को जोड़कर बनाए गए शब्दों, जैसे – बस, कलम, सड़क, शलजम इत्यादि को सुनना।
- शब्दों से बने छोटे–छोटे मात्रा रहित वाक्यों को सुनना।
- पाठ्यक्रम को ध्यानपूर्वक सुनना।
- दूसरों की बातों को सुन–समझकर अपने शब्दों में कहने का प्रयास करना।
- चित्र देखकर अभिव्यक्ति करने की कोशिश करना।
- छोटी–छोटी कविताओं कहानियों को हावभाव के साथ कहना।
- हिन्दी ध्वनियों को बोलने का अभ्यास करना।
- छोटे–छोटे वाक्य बोलना।
- पाठ्यक्रम सामग्री को बोलकर सुनाना।

पढ़ना और लिखना संकेत

- चित्र देखकर अनुमान लगाते हुए पढ़ना।
- हिन्दी ध्वनियों को देख–सुनकर समझना एवं पढ़ना।
- हिन्दी के वर्णों एवं मात्राओं को पढ़ना।
- हिन्दी भाषा में लिखित एवं मुद्रित सरल सामग्री को पढ़ना।
- सस्वर वाचन, व्यक्तिगत, सामूहिक अथवा अनुकरण वाचन करने योग्य बनाना।

- मौन वाचन करने के योग्य बनाना।
- हिन्दी वर्णो का शुद्ध लेखन।
- मात्रा रहित एवं मात्रा सहित शब्दों से बने सरल वाक्य को लिखना।
- अपने मन की बात को लिखकर कहने की कोशिश करना।

परिवेशीय सजगता

- आसपास की प्रकृति (पेड़–पौधे, मौसम, धरेलू पशु–पक्षी इत्यादि) को देखना एवं अपनी राय बनाना।
- परिवेश में उपलब्ध धार्मिक स्थलों, साईनबोर्ड, समाचार पत्रों, रेडियो, टी.वी., चैनलों इत्यादि के रूप में द्वितीय भाषा सीखने के प्रति उत्सुक होना।
- घरेलू भाषा एवं हिन्दी के बीच सम्बंध बनाने की कोशिश करना।
- आसपास में लिखे, देखे, पढ़े हुए नये शब्दों के प्रति जिज्ञासा एवं उत्सुकता का भाव होना।

सीखने के तरीके तथा माहौल
(सभी बच्चो को ध्यान में रखकर)

- अपनी भाषा में बातचीत करने की स्वतंत्रता एवं अवसर हो।
- अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहे भाषिक हो अथवा सांकेतिक।
- वर्णमाला के अक्षरों के प्रतिरूप, खिलौना, चित्र इत्यादि के रूप में उपलब्ध हो।
- अपनी भाषा गढ़ने और उनका प्रयोग करने की स्वतंत्रता हो।
- छोटी कहानियाँ, कविताएँ अथवा बाल साहित्य स्तरानुसार पाठ्यसामग्री, साईनबोर्ड, अखबारों की कतरनें, विद्यार्थियों के आस–पास उपलब्ध हो एवं उन पर बातचीत करने के अवसर उपलब्ध कराए जाए।
- शब्द–भंडार को विकसित करने वाले पर्यायवाची शब्दों मिलती–जुलती ध्वनि वाले शब्दों, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द को दिखाने वाले सुन्दर एवं आकर्षक चार्ट आदि उपलब्ध हो।
- पाठ्य–सामग्री पर अपनी भाषा में बात करने ,अपनी राय देने, प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता हो।
- अपना परिवार, विद्यालय, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल, जैसे विषयों तथा अपने अनुभवों पर लिखकर एक दूसरे से बाँटने के अवसर हो।
- अपनी बात को अपने अंदाज में बोल–लिखकर अभिनय करने की स्वतंत्रता हो।
- अध्यापक द्वारा दिखाए चित्रों, दृश्य–श्रव्य सामग्री पर अथवा उसके द्वारा कही गई बातों, संदर्भों पर क्रिया–प्रतिक्रिया करने का सुअवसर हो।
- बाल–स्तर के अनुसार राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक विषयों पर आधारित पुस्तकें पुस्तकालय में उपलब्ध हो।
- आसपास घटने वाली घटनाओं पर बातचीत या चर्चा करने के अवसर हो।

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलते रहती है। इसमें संकेतक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

संकेतक सीखने में अभिप्रेरक का काम करता है और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता हो।

विचारणीय प्रश्न

1. सीखने–सिखाने में संकेतक की क्या भूमिका होती है?
2. सीखने के संकेतकों के निर्धारण में किस–किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
3. एन.सी.ई.आर.टी. ने सीखने के किन–किन संकेतकों की चर्चा की है?

आकलन के मूलभूत चार तरीके हैं

1. व्यक्तिगत आकलन
2. सामूहिक आकलन
3. स्व–आकलन
4. सहपाठियों द्वारा आकलन।

आकलन के प्रमुख उपकरण एवं तकनीक में हैं – मौखिक आकलन, लिखित आकलन, अवलोकन, पोर्टफोलियो, जाँच सूची, रेटिंग स्केल इत्यादि।

हिन्दी भाषा शिक्षण के आकलन में प्रश्नों की भूमिका

भाषा के क्षेत्र में आकलन का उद्देश्य छात्रों के व्याकरण व भाषा प्रयोग, शुद्धता, सहज प्रवाहिता एवं अभिव्यक्ति की जाँच करना है।

हिन्दी भाषा के शिक्षण के लिए जो उद्देश्य निर्धारिक किए गए है।, उसकी प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। शिक्षक द्वारा जिस शिक्षण विधियों का प्रयोग किया है, क्या वह सही है या गलत अथवा पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल है या नहीं इन सब बातों की जाँच मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा ही हो सकता है। वह मूल्यांकन प्रश्न–पत्र के द्वारा ही होता है। प्रश्न–पत्र सही और प्रभावशाली होता है, तो आकलन अच्छी तरह से होता है। यदि पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्न–पत्र ठीक नहीं हो तो, हमारा सारा प्रयास निरर्थक सिद्ध होगा। अन्य शब्दों में हम कह सकते है कि प्रश्न–पत्र बड़ी सावधानी और चिंतन–मनन के साथ बनाया जाना चाहिए। प्रश्नों में विविधता हो, प्रश्न स्पष्ट और विषयवस्तु से संबंधित हो, और प्रत्येक प्रश्न के लिए अंको का उल्लेख हो, ये सब बातें भी नितांत आवश्यक है। प्रश्न–पत्र तैयार करते समय शिक्षक को निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- प्रश्न–पत्र तैयार करने वाला शिक्षक अनुभवी और विषय का ज्ञाता होना चाहिए।
- शिक्षक को पाठ्यक्रम का आधार बनाकर ही प्रश्न–पत्र तैयार करना चाहिए।
- प्रश्न–पत्र सरल, सुबोध और स्पष्ट भाषा में होना चाहिए।
- प्रश्न–पत्र सभी बच्चों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए।
- हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक में गद्य–पद्य (कहानी, नाटक, निबंध, कविता) व्याकरण आदि अनेक विधाएं संकलित की जाती है। अतः प्रश्न–पत्र बनाते समय सभी विधाओं से प्रश्न का संकलन होना चाहिए।

- प्रश्न–पत्र बनाने के पश्चात् उसकी सभी त्रुटियाँ दूर की जानी चाहिए।
- प्रश्न–पत्र का निर्माण करने के पश्चात् उत्तर–तालिका का भी निर्माण कर लिया जाना चाहिए।

परीक्षाओं के प्रकार Types of Examination

हिन्दी भाषा शिक्षण के आकलन करते समय परीक्षाओं के प्रकार पर ध्यान देना जरूरी हैं। परीक्षाओं का वर्गीकरण अनेक रूपों में किया जाता है। इनके दो मुख्य आधार हैं– एक परीक्षाओं का स्वरूप और दूसरा प्रश्नों का स्वरूप परीक्षाओं के स्वरूप के आधार पर परीक्षाएं तीन प्रकार की होती हैं– मौखिक परीक्षाएं (Oral Examination) लिखित परीक्षाएं (written Examination) और प्रयोगिक परीक्षाएं (Practical Examination)

1. मौखिक परीक्षाएं (Oral Examination) इस परीक्षा में मौखिक रूप से प्रश्न पूछे जाते हैं। मौखिक रूप से उत्तर प्राप्त किये जाते हैं।

भाषा शिक्षण के आकलन में इस प्रकार की परीक्षाओं की बड़ी उपयोगिता है। सुनने, बोलने और पढ़ने का मौखिक रूप से मापन किया जाता है। छात्रों के उच्चारण, वाचन, वार्तालाप तथा भाषण कौशल की परीक्षा मौखिक परीक्षा द्वारा ही सम्भव हो पाता है। इनके माध्यम से भाषा के आधारभूत सिद्धांतों में छात्र की सूझ का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार के मूल्यांकन द्वारा छात्रों के विषय संबंधी ज्ञान का गहनता से अध्ययन संभव है। इसमें कम समय में अधिक प्रश्न किए जा सकते हैं। परीक्षक अपने प्रश्नों को समय पर ही परिवर्तित व परिमार्जित कर सकता है। छात्रों द्वारा न समझे जाने वाला प्रश्न व कथन का स्पष्टीकरण भी उसी समय किया जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस परीक्षा में अवांछित साधनों का प्रयोग सम्भव नहीं है।

भाषा शिक्षण के आकलन में मौखिक प्रश्न विद्यार्थियों में एकाग्रता रचनात्मकता का विकास, सामान्य ज्ञान में वृद्धि आदि उसके व्यवहारिक जीवन को उपयोगी बनाता है।

<u>मौखिक परीक्षण का प्रयोजन</u>

- स्मरण शक्ति का विकास करना।
- विद्यार्थियों में रचनात्मकता एवं एकाग्रता का विकास करना
- विद्यार्थियों में विचार शक्ति तथा कल्पना शक्ति विकसित करना।
- मौखिक प्रश्न विद्यार्थियों में गति एवं शुद्धता से कार्य करने की आदत डालता है।
- अध्ययन किए गए पाठ का अभ्यास एवं पुनरावृत्ति करना।

लिखित परीक्षण

(written Examination)

वे परीक्षाएं जिनमें परीक्षाओं के प्रश्न के उत्तर लिखकर दिए जाते हैं, उन्हें लिखित परीक्षा कहते हैं। भाषा शिक्षण में लिखित परीक्षाओं की बहुत उपयोगिता हैं। इसके द्वारा मुख्य रूप से छात्रों के लेखन कौशल के अंतर्गत तीन तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं।

1. **वस्तुनिष्ठ परीक्षण–** इन परीक्षण में प्रश्नों की संख्या अधिक होती है। इसमें प्रश्न छोटे–छोटे एकांशों के रूप में पुछे जाते हैं। हर एकांश का एक निश्चित उत्तर देना होता है।
   वस्तुनिष्ठ परीक्षण का प्रयोग सर्वप्रथम बीसवीं शताब्दी में आरंभ हुआ, इसलिए इसे नवीन प्रकार की परीक्षा भी कहते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न का एक निश्चित उत्तर होता है, तथा परीक्षार्थी से उसी उत्तर की अपेक्षा की जाती हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षण अधिक विश्वसनीय और वैध होते हैं।
   प्रश्नों के उत्तर की प्रकृति के आधार पर वस्तुनिष्ठ प्रश्न अनेक प्रकार के हो सकते हैं कम्प्यूटर के प्रयोग से वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन अत्यंत शीघ्रता एवं पूर्ण यथार्थता से किया जा सकता है।

   वस्तुनिष्ठ परीक्षण के लाभ

   - वस्तुनिष्ठ परीक्षण एवं नवनी प्रकार का परीक्षण है। शैक्षिक मापन व मूल्यांकन के क्षेत्र में इनका प्रयोग किया जाता है।
   - वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन सरलता से हो जाता है।
   - वस्तुनिष्ठ परीक्षणों से समय और श्रम की बचत होती है। कम समय में अधिक प्रश्नों का मूल्यांकन किया जाता है।
   - वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्न स्पष्ट होते हैं।

लधुउत्तरीय परीक्षण

लघुउत्तरीय परीक्षण निबंधात्मक परीक्षण का परिमार्जित रूप है। इसमें छोटे–छोटे प्रश्न पुछे जाते है। हिन्दी भाषा के आकलन में लघु उत्तरीय प्रश्न का अपना महत्व है। छात्रों के भाषायी ज्ञान और कौशलों के मापन में इनका प्रयोग किया जा सकता है। निबंधात्मक प्रश्न पूरे पाठ्यक्रम पर पूछना सम्भव नहीं होता, इसके लिए लघु उत्तरीय प्रश्न पुछे जाते है।

- इसमें निश्चित सूचनाओं और तथ्यों के विषय में प्रश्न पुछा जाता है।
- परीक्षणों की विश्वसनीयता बढ़ जाती है, क्योंकि इसमें प्रश्नों की संख्या निबंधात्म प्रश्नों की अपेक्षा अधिक होती हैं।

- इसमें तर्क, चिंतन आदि मानसिक शक्तियों का अधिक अच्छी तरह से मापन किया जा सकता हैं।
- लघु उत्तरीय प्रश्नों की रचना सरल एवं स्वभाविक होती है।

निबंधात्मक परीक्षण

निबंधात्मक परीक्षण प्राचीन काल से ही प्रचलित है। इसमें उत्तर निबंध के रूप में देना होता है। वर्तमान शताब्दी के प्रारंभ होने से पहले तक लिखित परीक्षाएं लेने का एक मात्र तरीका था, इसलिए इस प्रकार के परीक्षणों को परम्परागत परीक्षण भी कहा जाता है। निबंधात्मक परीक्षण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सर्वोत्तम ढंग से मापन करता है। इसमें विद्यार्थियों के ज्ञान, विचार प्रक्रिया की प्रकृति, गुणवत्ता का भी मापन करता है।आलोचनात्मक चिंतन सृजनाशीलता, अभिव्यक्ति क्षमता, तार्किक संश्लेषण, मूल्यांकन क्षमता आदि अनेक योग्ताओं का मापन निबंधात्मक परीक्षण के द्वारा किया जाना ही सम्भव है।

निबंधात्मक परीक्षण के लाभ

- इनके द्वारा विभिन्न कौशलों एवं मानसिक शक्तियों का मापन किया जाता है।
- यह परीक्षण तथ्यों के पुनः स्मरण पर आधारित होता है।
- परीक्षार्थी को स्वेच्छा से प्रश्नों से सम्बंधित तथ्यों को संगठित व प्रकाशित करने की स्वतंत्रता होती है।
- प्रश्नों की संख्या अन्य परीक्षणों की तुलना में कम होती है।
- प्रश्न व्यवहारिक ज्ञान का विस्तृत परख, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानसिक शक्तियों के विकास में सहायक होता है।

प्रायोगिक परीक्षा

वे परीक्षाएँ जिसमें परीक्षार्थियों को प्रायोगिक कार्य करने को दिए जाते है, और वे अपनी क्षमतानुसार पूरा करते हैं। उन्हें प्रायोगिक परिक्षा कहते है। प्रायोगिक परीक्षा, विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान आदि विषयों के लिए अधिक उपयोगि मानी गई है। भाषा भी एक कौशल है। भाषा–शिक्षण का मूल्यांकन करने के लिए प्रायोगिक परिक्षा भी ली जा सकती है। इसके अन्तर्गत भाषा में सस्वर पठन, कविता पाठ, भाषण, वाद–विवाद, सुलेख, निबंध–लेखन आदि क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। प्रायोगिक परिक्षा केवल लिखित और मौखिक परीक्षा के साथ ली जा सकती है।

हिन्दी केवल विषय ही नहीं है, वरन् विषयों को सीखने का एक माध्यम भी है। हिन्दी भाषा के आकलन में वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न, निबंधात्मक प्रश्न एवं मौखिक प्रश्न, के द्वारा ही विद्यार्थियों के मौलिक चिंतन सृजनशीलता अभिव्यक्ति इत्यादि का सापेक्षिक जानकारी प्राप्त होता है। विद्यार्थियों का मूल्यांकन में इन प्रश्नों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

सारांश

- आकलन, मूल्यांकन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में प्रभावी बनाने में प्रमुख भूमिका अदा करते हैं।
- आकलन और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को साथ–साथ चलना चाहिए।
- आकलन सिर्फ शिक्षार्थी ही नहीं बल्कि शिक्षक, शिक्षण सामग्री, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, पाठ्यक्रम आदि का भी होता है। आकलन से प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर इनमें बदलाव किया जाता है।
- आकलन का उपयोग सीखने के उपकरण और उपलब्धि स्तर जानने के रूप में होता है।
- आकलन शिक्षार्थी के पूर्व की प्रगति और उसके उम्र सापेक्ष मापदंडों की तुलना में होनी चाहिए।
- आकलन अधिगम की स्वाभाविक प्रक्रिया में होनी चाहिए।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन, मूल्यांकन की कोई पृथक गतिविधि न होकर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
- शिक्षार्थियों के सीखने की गति तीव्र करने के लिए यह आवश्यक है कि मूल्यांकन बाल–केन्द्रित हो।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षार्थियों के अकादमिक प्रगति के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और सामाजिक विकास के प्रगति की जानकारी उपलब्ध करता है।
- विद्यार्थी के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि बच्चों के शारीरिक विकास, नियमित उपस्थिति, खेलों तथा सांस्कृतिक गतिविधि में सहाभागिता, नेतृत्व क्षमता, सृजनात्कता इत्यादि व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों के क्रमिक विकास का सतत् मूल्यांकन किया जाता रहे।
- भाषा के संदर्भ में आकलन का उद्देश्य–भाषा की समझ, इसके विभिन्न संदर्भों में उपयोग करने की क्षमता का मापन है।
- भाषा संबंधी आकलन केवल भाषा की कक्षा तक सीमित न रहे, इसे अन्य विषयों की कक्षाओं में भी शिक्षार्थी के भाषायी कौशलों को परखा जाना चाहिए।

मूल्यांकन प्रश्न

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?
2. आकलन को परिभाषित करें?
3. सुनना और बोलने के आकलन में आप किन–किन आधारों को ध्यान में रखेंगे।
4. भाषा के संदर्भ में आकलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालें।
5. आकलन मूल्यांकन की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में किस प्रकार प्रभावी भूमिका अदा करता है?
6. सीखने में संकेतकों की भूमिका पर प्रकाश डालें।
7. सीखने के संकेतकों के निर्धारण करते समय किन–किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए।
8. हिन्दी भाषा के अंतर्गत सुनना और बोलना क्षमताओं का आकलन करने के लिए बातचीत बेहद सहज तरीका है। कैसे?

संदर्भ

- शिक्षा दर्पण–भाषा शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन
- बिहार पाठ्यचर्चा की रूपरेखा, 2008 (SCERT पटना, बिहार)
- पंजाब पाठ्यचर्चा की रूपरेखा, 2008 (SCERT, पंजाब)
- बिहार पाठ्यचर्चा की रूपरेखा, 2008 (SCERT पटना, बिहार) Vol–3 ;IGNOU)
- प्ररम्भिक कक्षाओं में भाषा सीखना Vol–503 ;NIOS)
- आकलन स्रोत पुस्तिका (भाषा हिन्दी) NCERT दिल्ली
- हिन्दी का शिक्षण शास्त्र–01 (D.El.Ed, ODL) SCERT, पटना
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन – बिहार शिक्षा परियोजना परिषद राजेन्द्र नगर, पटना

Website Links

- www.ncert.nic.in
- www.nuepa.org
- www.educationbihar.gov.in